सर्वहित संदेश

कलियुगाब्द 5123 विक्रमी संवत् 2078 पौष – माघ जनवरी–2022

यदि छुआछूत पाप नहीं है,

तो दुनिया में कुछ भी पाप नहीं है।...... बाला साहब देवरस

तृतीय सरसंघचालक

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

अपनी बात

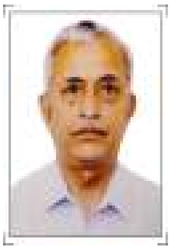

प्रिय भैया/बहनों,

सादर वन्देमातरम ।

परतन्त्रता के काल में तत्कालीन सत्ताधारियों द्वारा अपने निहित स्वार्थों के कारण समाज में अनेक प्रकार के विभाजनकारी प्रयास किए गए जिनके कारण अनेक सामाजिक समस्यायों का जन्म हुआ। इनमें से सबसे प्रमुख समस्या है - छुआछूत की । कर्म आधारित जाति व्यवस्था को जन्म आधारित बना दिया गया । समाज का एक वर्ग दूसरे से घृणा करने लगा । एक वर्ग ने समस्त ज्ञान को अपनी जागीर समझ लिया जबकि एक वर्ग ने स्वयं को धन सम्पत्ति का ठेकेदार घोषित कर दिया । इस अवस्था में संतों ने समाज में एक नवीन चेतना का संचार किया। ऊंच नीच की इस विषमता पर कठोर अघात किया । इस जन्म आधारित जाति व्यवस्था के दुष्परिणाम हम आज भी भुगत रहे हैं । उन महान संतों की शिक्षाएं और उपदेश आज भी उतने ही उपयुक्त हैं जितने तब थे । इस अंक में इसी विषय को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।

फरवरी मास के अंक का विषय रहेगा 'भारत का विश्व विज्ञान में योगदान।' इस विषय व अन्य स्थाई स्तम्भों हेतु आपकी रचनाएं सादर आमंत्रित हैं ।

सम्पादकीय

यह अंक सामाजिक समरसता विषय पर आधारित है । समरसता यानि समरस होने का भाव। सामाजिक समरसता यानि सामाजिक समानता यानि सभी को अपने समान मानना। समरसता यानि जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता का जड़मूल से उन्मूलन कर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द बढ़ाना तथा समाज के सभी वर्गों के मध्य एकता स्थापित करना।सृष्टि में सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की सन्तान हैं। सब में एक ही चैतन्य का वास है। इस बात को हृदय से स्वीकार करना सामाजिक समरसता है। हमारे समाज का दुर्भाग्य है कि हम अपने ही धर्म को ठीक से नहीं समझ पाए। हमारा दुर्भाग्य है कि समाज में श्रेष्ठ तत्व ज्ञान और व्यवहार को अलग-अलग कर दिया गया। हमारे देश में श्रेष्ठतम दार्शनिक होने के बाद भी काल प्रवाह में अनेक ऐसी शिथिलताएँ और कुरीतियाँ समाज में प्रविष्ट हो गईं जिनका परिणाम हम भुगत रहे हैं। इनमें सबसे कष्टकर विषय है जाति के आधार पर हिन्दू और हिन्दू के बीच भेदभाव और अस्पृश्यता। बंधुत्व ही भारतीय समाज की अंतरात्मा है। वैसे तो वह कीड़े-मकोड़े व पशु-पक्षी आदि के साथ भी ममता का व्यवहार करना चाहिए। ये जाति-पांति की दीवारें बहुत पुरानी हैं, इनकी जड़ें बहुत गहरी हैं, इनको तोड़ना होगा। यह कार्य तभी हो सकता है जब हम निस्वार्थ और प्रेममय व्यवहार से इस दीवार को तोड़ दें। बंधुत्व युक्त समरसता ही समता को जन्म देती है । जब समरसता की भावना परिपुष्ट होगी तभी हमारा यह चिरंजीवी समाज पुन: एक बार अपने सामर्थ्य व तेज को विश्व में प्रकाशित करेगा । सामजिक न्याय का वास्तविक मार्ग है हमारे धर्म और समाज के चिन्तन का दृष्टिकोण है - आत्मवत सर्वभूतेषु , सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुम्बकम, सर्वे भवतु सुखिन: । जाति-पांति, पंथ सम्प्रदायों में परस्पर सौहार्द हो, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्र उन्नत हो, विश्व में देश का सम्मान बढ़े। भारत पुन: विश्व गुरु की भूमिका में स्थापित हो । यह सब तभी सम्भव होगा जब समाज में समरसता का भाव व्यवहारिक रूप में होगा -'समरस समाज, समरस भारत, समर्थ भारत - स्वाभिमानी भारत'

इन्हीं शब्दों के साथ - मनमोहन कृष्ण

इस अंक में पढ़ें

सुविचार	3	सामान्य ज्ञान	14-15	करियर	24
आवरण कथा	4	संस्कृत	16	प्रयोग	25
कहानियां	5- 6	English	17	स्वास्थ्य	26-27
स्वरचित/संकलित	7-9	विज्ञान	18	अभिभावकों हेतु	28-29
धारावाहिक कथा	10	गणित	19	रामायण चित्रकथा	30-31
लेख	11	वैदिक गणित	20	चुटकुले	32
बुद्धि परीक्षण	12-13	बुद्धि परीक्षण	21	चिन्तन	33
		अक्षर ज्ञान	22	गतिविधियां	34 -38
		पर्यावरण	23		

इस पत्रिका में छपे विचार लेखक के अपने हैं। प्रकाशक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

रागा विचि स्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ।।
सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु ।।
रतनु अमोलकु पाइआ गुरु का सबदु बीचारु ।।
जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ।।
नानक सचै सतिगुरि सेविए सदा सचु वापारु ।।2।।

पन्ना 83

यदि सत्य के साथ प्रेम बढ़ाने को उत्साहित करे तो रागों में सिरीराग श्रेष्ठ है। तब सदैव सत्य प्रभु मन में बसता है और अपार स्थिर मति प्राप्त होती है । शब्द-गुरु का चिन्तन करने से ही परमात्मा रूपी अमूल्य रतन प्राप्त होता है व्यक्ति की जीभ, मन एवं शरीर अर्थात मानव जन्म भी सफल हो जाता है । परन्तु हे नानक, सत्य का व्यापार तभी हो सकता है जब सच्चे सद्गुरु की सेवा की जाए ।

हिन्दव:सोदरा: सर्वे, न हिन्दू: पतितो भवेत् ।
मम दीक्षा हिन्दू रक्षा, मम मंत्र: समानता ।
सब हिन्दू भाई (सहोदर) हैं, कोई भी हिन्दू पतित नहीं है। हिंदुओं की रक्षा मेरी दीक्षा है, समानता ही मेरा मंत्र है।

कबीरा कुंआ एक है,पानी भरैं अनेक ।
बर्तन में ही भेद है,पानी सबमें एक ॥

संत कबीर

"यदि छुआछूत पाप नहीं है, तो दुनिया में कुछ भी पाप नहीं है।" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सरसंघचालक **श्री बालासाहब देवरस**

वीरां ने बलिदान जो कीते

वीरां ने बलिदान जो कीते, ओह सब सानूं याद रहे,
आपणा देश न टुट्टे वीरों, आपणा देश आजाद रहे।
आपणा देश आजाद रहे, आपणा देश आजाद रहे।(1)
भारत मां लई खून डोलिया, बंदे वीर वैरागी ने,
देश लई सरवंश वारिआ,दशमेश पिता जिहे त्यागी ने।
कसम है सानूं जोरावर दी, वीर हकीकत याद रहे।
आपणा देश आजाद रहे, आपणा देश आजाद रहे।(2)
जैन,बौद्ध,सिख,आर्य समाजी, हरिजन गिरिजन हिन्दू ने,
गंगा गौ गुरुवाणी गीता, सांझ एकता बिन्दू ने।
न कोई झगड़ा प्रांत बोली दा, न कोई वाद विवाद रहे।
आपणा देश आजाद रहे, आपणा देश आजाद रहे। (3)

इस मास के महत्वपूर्ण दिवस

9. श्री गुरु गोबिंद सिंह प्रकाशोत्सव
9.प्रवासी भारतीय दिवस
10. विश्व हिन्दी दिवस
11.लाल बहादुर शास्त्री स्मृति दिवस
12.स्वांमी विवेकानंद जयंती
13. लोहड़ी
14. मकर संक्रांति
15. भारतीय थल सेना दिवस
23. कुष्ठ निवारण दिवस
23. नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती
25. राष्ट्रीय मतदाता दिवस
26.भारतीय गणतंत्र दिवस
28.लाला लाजपत राय जयंती
29.राष्ट्रीय प्रेस दिवस
30.महात्मा गांधी स्मृति दिवस

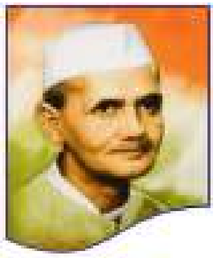

सामाजिक समरसता का अंतर्निहित भाव

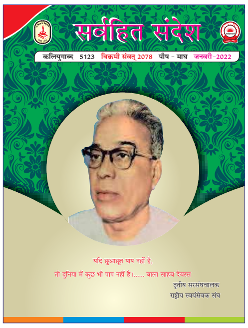

यह बात तो निर्विवादित रूप से सत्य है कि किसी राष्ट्र या समाज की उन्नति तभी सम्भव है जब उसमें बसने वाले लोगों के मध्य परस्पर भेदभाव न हो । किसी प्रकार की ऊंच नीच की भावना न हो । भावनात्मक एकता और सामाजिक समानता हो। वास्तव में तो सामाजिक समरसता 'आत्मवत सर्वभूतेषु' का दर्शन है अर्थात आत्मवत व्यवहार का दर्शन । अर्थात सभी को अपना जैसा ही समझकर व्यवहार करना । अपने देश में तो प्रारम्भ से ही यह माना गया है कि एक ही चैतन्य समस्त सृष्टि में विद्यमान है । सामाजिक समरसता का प्रतिपादन इसी अद्वैत सिद्धांत का सामाजिक व्यवहारिक स्वरूप है । सामाजिक समरता अद्वैत के सिद्धांत पर आधारित विचार है जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है । यह ही अपने देश का सामाजिक दर्शन है जिसके आधार पर हमने विश्व गुरु का स्थान प्राप्त किया । यह अद्वैत के सिद्धांत पर आधारित सामाजिक समरता ही भारतीय संस्कृति की विशेषता है ।

यदि सामान्य शब्दों में कहा जाए तो समरसता का अर्थ सामाजिक समानता के साथ-साथ 'आत्मवत सर्वभूतेषु' का विचार भी है । सबका सम्मान और सबके साथ आत्मीयतापूर्ण व्यवहार समरसता के लिए आवश्यक है । एक ऐसा विचार जिसमें सम्बन्धों की प्रगाढ़ता हो, अभिन्नता हो । समरसता मात्र अध्यात्मिक दर्शन ही नहीं बल्कि संगठित समाज का व्यवहारिक चिन्तन भी है। सामजिक समरसता समाज के समस्त वर्गों के संगठन का ही प्रयास है जिसका लक्ष्य विभेद मुक्त एक आदर्श समाज की रचना करना है हम सभी एक हैं, हममें कोई भिन्नता नहीं है, इसकी अभिव्यक्ति है समरसता । सामूहिक उन्नति ही लक्ष्य हो । हम सभी बन्धु बांधव मिलकर उन्नति करें। यह विचार किसी प्रकार के वर्ग संघर्ष को जन्म नहीं देगा बल्कि सहअस्तित्व, समन्वय, परस्पर आवलंबन, समता और सर्वमंगल की कामना को जन्म देगा । वास्तव में यह एकात्मता का साक्षात्कार है।

वास्तव में अपने संगठन द्वारा 'सामाजिक समरसता' हेतु किया जा रहा कार्य कोई आन्दोलन नहीं है। यह तो अपने संगठन और अपने देश का स्थाई भाव है । इसका उद्देश्य जातिगत भेदभाव व अस्पृश्यता को जड़मूल से उखाड़ कर फेंक देना है। इसका लक्ष्य समाज के सभी वर्णों एवं वर्गों के मध्य एकता स्थापित करना है। यह ही हमारा मूलभूत जीवन दर्शन है ।आंदोलनों की भांति इसकी प्रकृति भाषणबाजी, जलसे, जुलूस तक ही सीमित न होकर गुणात्मक है, शांत, धीर, गम्भीर है ।यह कोई अलगाव वादी या अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति का आन्दोलन नहीं है और न ही यह कोई राजनैतिक आन्दोलन है । यह किसी अलग पहचान और अस्तित्व का भी आन्दोलन नहीं है । इसमें तो एक नैतिकता व अध्यात्मिकता है । अपने संगठन द्वारा सामाजिक समरसता के लिए किया जा रहा कार्य तो 'न हिंदु पतितो भवेत' और 'यदि छुआछूत पाप नहीं तो दुनिया में कुछ भी पाप नहीं' (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सरसंघचालक माननीय बाला साहब देवरस का वाक्य) जैसे विचारों से प्रेरणा ग्रहण कर है।

देश में सुख समृद्धि रहे, समाज का प्रत्येक घटक परस्पर सद्भाव से रहे, नगरवासी, ग्रामवासी, वनवासी, गिरिवासी सभी भारत माता के पुत्र समरस भाव से रहें, समाज जीवन में नैतिक मूल्य प्रभावी हों, सामान्य जन सुखी और सुरक्षित अनुभव करे, व्यक्ति व्यक्ति का शोषण न करे, न्याय पाना सबके लिए सुलभ हो, दंडाधिकारी न्याय धर्म का पालन करें, शासन भ्रष्टाचार मुक्त हो, कृषक, व्यापारी, शिक्षक, उद्योगपति सब अपना-अपना कार्य कर्तव्य भावना से करने वाले हों, सबल दुर्बल का शोषण न करे, जाति-पांति, पंथों व सम्प्रदायों में परस्पर सौहार्द हो, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्र सतत विकासोन्मुख हो, विश्व में देश का सम्मान हो। कोई भी सत्ता लोलुप या आतंकी समूह, कोई भी धर्मांध, कोई भी तानाशाह हमारी मातृभूमि पर आक्रमण करने का साहस न कर सके, इस हेतु परम आवश्यक है कि अपना समाज एकजुट, संगठित और कर्तव्यनिष्ठ हो। यह है हमारी 'सामाजिक समरसता' की वैचारिक पृष्ठभूमि। इस आदर्श स्थिति को प्राप्त करने हेतु समय-समय पर अनेक संतों और महापुरुषों ने कार्य किया है। इन्हीं संतों और महापुरुषों की शिक्षाओं व उनके जीवन की घटनाओं को इस अंक में रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

शारदा सर्वहितकारी, 40 डी, चंडीगढ़ में मनाया गया 'नो पाल्यूशन डे'

रामानुजाचार्य को ज्ञान की प्राप्ति

आज से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व तमिनाडु के पेरुम्बदूर नामक नगर में रामानुजाचार्य का जन्म हुआ । वे वैष्णव मतावलंबी थे । एक दिन वे कहीं जा रहे थे कि उनके मार्ग में तथाकथित एक शूद्र कन्या आ गई । उन्होंने उससे दूर हटने को कहा । इस पर वह कन्या बोली – महाराज मैं किस दिशा में जाऊं ? मुझे तो सभी दिशाओं में सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान प्रभु की ही उपस्थिति प्रतीत हो रही है । सर्वत्र ही उस प्रभु की पवित्रता बिखरी है । मैं अपना यह अपवित्र शरीर लेकर कहां जाऊं ? हे सन्यासी जरा मेरा मार्गदर्शन तो करिए । इतना सुनते ही उनके ज्ञान चक्षु खुल गए । उनके पास उस कन्या के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था । उस कथन की वास्तविकता और सत्यता वे समझ चुके थे । कुछ क्षण के लिए वे मौन हो गए और फिर बोले, 'ओ बेटी, मुझे क्षमा कर दो। मैं अपनी जाति के मिथ्या अहंकार में डूबा हुआ था। मेरे ज्ञान पर पर्दा पड़ा हुआ था । तुमने मेरी आँखें खोल दीं । सच्चा ज्ञान मुझे मिल चुका है । मैं नहीं तुम ही ईश्वर की सच्ची भक्त हो।' आगे चलकर वह कन्या एक महत्वपूर्ण स्थान पर प्रस्थापित हुई ।

गौतम बुद्ध और सुनीत

सुनीत तथाकथित वंचित जाति के युवक थे । एक दिन वे सड़क पर झाड़ू लगा रहे थे । उसी समय तथागत गौतम उस मार्ग से जा रहे थे । उन्हें जाता देख सुनीत सड़क के किनारे खड़ा हो गए ताकि बुद्ध से उनका स्पर्श न हो जाए । भगवान बुद्ध सुनीत के पास गए और बोले – क्या तुम मेरे साथ रहना पसंद करोगे ? सुनीत को महान आश्चर्य हुआ कि उस जैसे एक क्षुद्र व्यक्ति से तथागत ऐसा क्यों पूछ रहे हैं । सुनीत ने उत्तर दिया – मेरे जीवन में आप प्रथम व्यक्ति हैं जिसने मुझसे इस प्रकार से प्रश्न पूछा । यदि आप मुझे शरण देंगे तो आपकी सेवा करके मैं अपना सौभाग्य समझूंगा । इस पर तथागत ने उसे दीक्षा देकर अपने संघ का सदस्य बना लिया ।

आनन्द और एक कन्या

गौतम के परम प्रिय शिष्य आनन्द एक दिन भिक्षा मांगकर अपने विहार की ओर लौट रहे थे । मार्ग में आनन्द को प्यास लगी । उन्होंने देखा कि एक कुँए से एक युवती पानी भर रही है । आनन्द ने उससे पीने के लिए पानी माँगा। परन्तु उस युवती ने अपनी जाति बताकर पानी पिलाने में असमर्थता प्रकट की। जिस पर आनन्द ने कहा – मैंने तुम्हारी जाति नहीं पूछी और न ही मैं जाति पांति को मानता हूँ । मैंने तो थोड़ा सा पानी माँगा है जिससे मेरी प्यास बुझ सके। । ऐसा कहने पर उस युवती ने आनन्द को पानी पिलाया । इस घटना से वह युवती बहुत ही प्रभावित हुई और आगे चल कर वह बौद्ध संघ में शामिल हो गई ।

मन चंगा तो कठौती में गंगा

संत रविदास जी जूते बनाने का काम करते थे। एक दिन एक ब्राह्मण उनसे अपनी जूतियाँ ठीक करवा रहा था । उसी समय उसने संत रविदास जी से गंगा स्नान करने चलने को कहा । इस पर संत रविदास जी बोले – मेरे पास तो समय नहीं है परन्तु जूते बनाने की मजदूरी एक कौड़ी मेरी ओर से मां गंगा को भेंट दे देना । जब गंगा स्नान के बाद उस ब्राह्मण ने गंगा में वह कौड़ी डालते हुए कहा कि रविदास ने आपके लिए भेजी है। तभी गंगा माँ प्रकट हुईं और उस ब्राह्मण को एक कंगन देते हुए कहा कि यह कंगन मेरी ओर से रविदास को दे देना। उस ब्राह्मण ने वह कंगन राजा को भेंट में दे दिया। रानी ने जब उस कंगन को देखा तो प्रसन्न होकर दूसरे कंगन की मांग करने लगीं। राजा ने ब्राह्मण को बुलाकर दूसरा कंगन लाने को कहा। ब्राह्मण घबरा गया क्योंकि उसने संत रविदास के लिए दिया गया कंगन खुद रख लिया था और उपहार के लालच में राजा को भेंट कर दिया था। वह संत रविदास के पास पहुंचा और पूरी बात बताई। तब संत रविदास ने अपनी कठौती (काठ का बर्तन जिसमें पानी भरा जाता है) में जल भर कर भक्ति के साथ माँ गंगा का आह्वान किया। गंगा मईया प्रसन्न होकर कठौती में प्रकट हुईं और रविदास की विनती पर दूसरा कंगन भी भेंट किया। इस प्रकार उस ब्राह्मण को संकट से छुटकारा मिला । तभी से कहावत है 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'

जूठन न छोड़ें

बर्तन से पूरी तरह से पोंछ–पोंछ कर खाना खाने वाले एक बालक मोहित का उसके साथी रोज मजाक उड़ाया करते थे । एक दिन उसके एक दोस्त ने मोहित से पूछा – क्या तुम बहुत गरीब हो जो बर्तन को पोंछ–पोंछ कर भी खा जाते हो ? मोहित ने कहा – इसके तीन कारण हैं । पहला कारण मेरे पिता के परिश्रम के प्रति मेरा आदर है जो अपने परिश्रम द्वारा कमाए गए रुपयों से मेरे लिए खाने की वस्तुएं खरीदकर लाते हैं । दूसरा बड़ा कारण यह मां के प्रति मेरा आदर है जो प्रतिदिन परिश्रम, लगन और प्यार से इन वस्तुओं को पकाती हैं । तीसरा और सबसे बड़ा कारण मेरा देश के किसानों के प्रति आदर है जो स्वयं भूखा रहकर और सर्दी, गर्मी, बरसात की परवाह किए बिना परिश्रम से इसे पैदा करते हैं । इसलिए जूठन छोड़ने या न छोड़ने का सम्बन्ध अमीरी गरीबी से नहीं है और न ही जूठन छोड़ने से हमारे शान बढ़ती है । यह उत्तर सुनकर उसके दोस्त आश्चर्यचकित रह गए और उन सभी ने कभी जूठन न छोड़ने का प्रण लिया ।

दो पत्ते

पहाड़ों से उतरती गंगा पूरे वेग से बह रही थी कि अचानक पेड़ से दो पत्ते नदी में आ गिरे। एक पत्ता आड़ा और एक सीधा गिरा। जो आड़ा गिरा वह अड़ गया, कहने लगा, 'आज चाहे जो हो जाए मैं इस नदी को रोक कर ही रहूँगा, चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाए, मैं इसे आगे नहीं बढ़ने दूंगा ।' वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा - रुक जा गंगा, अब तू और आगे नहीं बढ़ सकती, मैं तुझे यहीं रोक दूंगा ।'

पर नदी तो बढ़ती ही जा रही थी । उसे तो पता भी नहीं था कि कोई पत्ता उसे रोकने की कोशिश कर रहा है। पर पत्ते की तो जान पर बन आई थी । वो लगातार संघर्ष कर रहा था । वह नहीं जानता था कि बिना लड़े भी वहीं पहुंचेगा, जहां लड़कर, थककर, हारकर पहुंचेगा, पर यही व्यर्थ का संघर्ष उसकी पीड़ा और संताप का कारण बनेगा । वहीं दूसरा पत्ता जो सीधा गिरा था, वह तो नदी के प्रवाह के साथ ही बड़े मजे से बहता चला जा रहा था, यह कहता हुआ - 'चल गंगा, आज मैं तुझे तेरे गंतव्य तक पहुंचा के ही दम लूँगा, चाहे जो हो जाए मैं तेरे मार्ग में कोई अवरोध नहीं आने दूंगा, तुझे सागर तक पहुंचा ही दूंगा। नदी को इस पत्ते का भी कुछ पता नहीं था । वह तो अपनी ही धुन में सागर की ओर बढ़ती जा रही थी। पर पत्ता तो आनंदित है, वह तो यही समझ रहा है कि वही नदी को अपने साथ बहाए ले जा रहा है। आड़े पत्ते की तरह सीधा पत्ता भी नहीं जानता था कि चाहे वो नदी का साथ दे या नहीं, नदी तो वहीं पहुंचेगी जहाँ उसे पहुंचना है । पर यही उसके सुख का व आनंद का कारण बन जाएगा। जो पत्ता नदी से लड़ रहा है, उसे रोक रहा है, उसकी जीत का कोई उपाय संभव नहीं है और जो पत्ता नदी को बहाए जा रहा है उसकी हार का कोई उपाय संभव नहीं है। हमारा जीवन भी उस नदी के सामान है जिसमें सुख और दु:ख की तेज धारायें बहती रहती हैं । जो कोई जीवन की इस धारा को आड़े पत्ते की तरह रोकने का प्रयास भी करता है, वह मूर्ख है क्योंकि जीवन किसी के लिये रुक नहीं सकता है। जब जीवन में ऐसी सहजता से चलना सीख जाएंगे तो फिर सुख क्या? और दु:ख क्या ?

शिक्षा - सुख हमारी स्वयं की सम्पत्ति है । इसे बाहर नहीं अपने भीतर ही तलाशें। इससे हम सदैव सुखी रहेंगे।

बोध

एक देवरानी व जेठानी में किसी बात को लेकर आपस में तकरार हो गई दोनों में बात इतनी बढ़ गई कि उन्होंने एक दूसरे से कभी न बोले ने की कसम खाई

और मुंह फुलाकर अपने अपने कमरे में जा बैठीं । थोड़ी देर बाद जेठानी के कमरे के दरवाजे पर खट खट हुई । उसने जोर से पूछा कौन है ? बाहर से आवाज आई दीदी मैं । जेठानी ने जोर से दरवाजा खोला और बोली - अभी तो कसमें कहकर गई थी कभी न बोलने की । अब क्या हुआ ? यहाँ क्यों आई हो देवरानी ने कहा कि दीदी सोचकर तो यही गई थी परन्तु मां की एक बात याद आ गई कि जब भी किसी से कुछ कहासुनी हो जाए तो उसकी अच्छाइयों को याद करो । बस मैंने भी वही किया और आपके द्वारा दिया गया प्यार ही प्यार याद आने लगा और मैं चाय लेकर आ गई । बस फिर क्या था दोनों एक दूसरे के गले लग गई और बैठकर चाय पीने लगीं ।

शिक्षा - क्रोध को क्रोध से नहीं बल्कि बोध से जीता जा सकता है ।

ईश्वर ने मुझे क्यों चुना ?

प्रसिद्ध टैनिस खिलाडी आर्थर एश को 1983 में हार्ट आपरेशन के दौरान जब खून चढ़ा तो वो रक्त संक्रमित था और उनको एड्स हो गया । मृत्यु

शैय्या पर जब वो थे तो उनके बहुत सारे प्रशंसकों और फैन्स के खत आये । उनमें से एक ने परिचित ने पूछा, 'इस लाइलाज और खतरनाक बीमारी के लिये ईश्वर ने आपको क्यों चुना ?' इस पर आर्थर एश ने बहुत ही खुबसूरत जवाब दिया । विश्व में तकरीबन दस लाख बच्चे प्रति वर्ष टैनिस खेलना शुरू करते हैं । उन में से सिर्फ पांच लाख ही टैनिस खेल सीख पाते हैं । उनमें से ढाई लाख बच्चे ही प्रोफेशनल टैनिस खेलना सीख पाते हैं। उन ढाई लाख बच्चों में से भी सिर्फ सवा लाख बच्चे प्रोफेशनल सर्किट में खेल सकते हैं । उन सवा लाख में से भी सिर्फ पांच हजार बच्चे ग्रैंड स्लैम तक पहुंच पाते हैं । उन पांच हजार में से भी सिर्फ पचास बच्चे / युवा विम्बलडन तक पहुंचते हैं और सेमी फाइनल की योग्यता रखने के लिए मात्र चार खिलाड़ी बचते हैं । उन चार में से केवल दो फाइनल में पहुंचते हैं । जब विम्बल्डन कप मेरे हाथ में था तब मैंने ईश्वर से प्रश्न नहीं किया कि कप के लिये मुझे क्यों चुना ? तो आज जब मैं पीड़ा और तकलीफ में हूं तो मैं ईश्वर से कैसे सवाल कर सकता हूं कि इस लाइलाज रोग के लिये मेरे को क्यों चुना ?

सर्वहितकारी विद्या मंदिर, फाजिल्का में मनाई गई विद्या मंदिर संस्थापक श्री वेद प्रकाश जी अग्रवाल की पुण्य तिथि

43-बी, चंडीगढ़

छोकरां

40-डी, चंडीगढ़

डेराबस्सी

जालंधर प्रकाशवती

दिड़बा

फगवाड़ा

मोरिण्डा

मोहाली

मोहाली

रामपुरा फूल

रामपुरा फूल

मोरिण्डा (प्राईमरी)

केशव विद्या निकेतन जालन्धर

पटियाला

खमानों

पटियाला

पिछले अंक से आगे –

चारों भाइयों के न लौटने पर युधिष्ठिर उन्हें खोजने चल पड़े। उन्हें जलाशय के निकट चारों भाई मृत पड़े मिले । वे भी पानी पीने लगे तभी वही स्वर गूंजा – युधिष्ठिर। तुम्हारे भाइयों ने मेरा कहना नहीं माना और वे मृत्यु को प्राप्त हुए । जल पीने से पूर्व मेरे प्रश्नों के उत्तर दो नहीं तो तुम्हारा भी वही हाल होगा जो तुम्हारे भाइयों का हुआ है । युधिष्ठिर समझ गए कि यह कोई यक्ष है । वे उत्तर देने को तैयार हो गए । यक्ष प्रश्न पूछने लगा और युधिष्ठिर उत्तर देने लगे ।

यक्ष – मनुष्य का साथ कौन देता है ?

युधिष्ठिर – धैर्य ।

यक्ष – वायु से तेज कौन चलता है ?

युधिष्ठिर – मन ।

यक्ष – यश प्राप्त करने का एक मात्र साधन क्या है ?

युधिष्ठिर – दान देना ?

यक्ष – धरती से अधिक क्षमा कौन प्रदान करता है ?

युधिष्ठिर – माता ।

यक्ष – विदेश में कौन साथी होता ?

युधिष्ठिर – विद्या ।

यक्ष – किसे त्यागकर मनुष्य सबका प्रिय बन जाता है ?

युधिष्ठिर – अहंकार से उत्पन्न गर्व को त्यागकर

यक्ष – सबसे उत्तम लाभ क्या है ?

युधिष्ठिर – आरोग्य ।

यक्ष – किसके खो जाने पर दु:ख नहीं होता है ?

युधिष्ठिर– क्रोध ।

यक्ष – संसार में धर्म से भी बढ़कर क्या है ?

युधिष्ठिर– उदारता

यक्ष – किस प्रकार के व्यक्ति से की गई मित्रता सदा बनी रहता है ?

युधिष्ठिर– सज्जन व्यक्ति से ।

यक्ष – इस संसार में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है ?

युधिष्ठिर– प्रतिदिन हजारों लोग मरते हैं । इन्हें देखकर भी लोग अनंत काल तक जीवित रहना चाहते हैं ।

यक्ष ने अनेक प्रश्न पूछे और युधिष्ठिर ने धैर्यपूर्वक सबके उत्तर दिए। इससे यक्ष प्रसन्न हो गया ।

यक्ष ने कहा – युधिष्ठिर, मैं तुम्हारे चारों भाइयों में से किसी एक को जीवित कर सकता हूँ ।

बताओ किसे जीवित करूं ? युधिष्ठिर ने कहा – नकुल को जीवित कर दें । यक्ष द्वारा इसका कारण पूछे जाने पर युधिष्ठिर ने उत्तर दिया ङ्क माता कुंती के पुत्रों में से मैं जीवित हूँ । मैं माता माद्री के भी के पुत्र को जीवित देखना चाहता हूँ । इस पर यक्ष ने कहा – पुत्र युधिष्ठिर, तुम्हारे चारों भाई जीवित हो जाएं । यक्ष के रूप में धर्मराज स्वयं थे । वे युधिष्ठिर की बुद्धिमत्ता की परीक्षा लेना कहते थे । पुत्र की की विद्वता और उसे धर्म व नीति पर चलते हुए देखकर वे अति प्रसन्न हुए ।

राजा विराट के यहाँ आज्ञातवास

वनवास के 12 वर्ष व्यतीत हो गए परन्तु वनवास का 13 वां वर्ष पांडवों के लिए कठिन था।उन्हें एक वर्ष छिपकर रहना था । कौरवों को उनका पता नहीं चलना चाहिए था । पांडवों ने ऋषि धौम्य से मिलकर विचार किया और राजा विराट के यहा भेष बदलकर रहने लगे । विराट पांडवों के पिता पांडु के मित्र थे । राजा विराट के यहाँ जाने से पूर्व उन्होंने अपने अस्त्र शस्त्र एक शमी के घने वृक्ष में छिपा दिए ।

प्रांत के पूर्ण कालिक कार्यकर्ताओं का सम्पन्न हुआ मासिक अभ्यास वर्ग

केशव विद्या निकेतन, जालंधर में प्रांत के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं का अभ्यास वर्ग सम्पन्न हुआ। इस अभ्यास वर्ग में गत मास की समीक्षा, आगामी योजना, कार्य विस्तार व दृढ़ीकरणकरण, व्यक्तिगत विकास सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। बैठक में संगठन मंत्री विजय सिंह जी, क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री राजेंद्र जी, प्रांत प्रशिक्षण प्रमुख विक्रम समयाल जी विशेष रूप से उपस्थित हुए।

नई सोच नई उम्मीद

आपने बिल्ली और चूहों की कहानी तो सुनी होगी। जिसमें बिल्ली के आतंक से डरे हुए चूहे बिल्ली के गले में घंटी बाँधने की योजना बनाते हैं। कई पाठकों ने यह पढ़ा होगा कि ये योजना इसलिए असफल हो गयी कि कोई भी घंटी बाँधने के लिए आगे नहीं आया। इसके आगे की कहानी यह है कि एक युवा चूहे ने बिल्ली को धोखे से नींद की गोली खिला कर उसके गले में घंटी बाँध दी थी। लेकिन उसके बाद क्या हुआ? क्या चूहों की जिंदगी बदल गई ? उनकी जिंदगी खुशहाल हुई या फिर पहले से भी बदतर हो गई ? बिल्ली के गले में घंटी बाँधने के बाद सभी चूहे राहत की साँस ले रहे थे। उन्हें लगा कि उनकी जिंदगी में अब बिल्ली के आतंक का अंत हो गया है। जश्न मनाने के लिए चूहों ने एक भव्य आयोजन किया। अभी जश्न की शुरुआत हुई ही थी कि अचानक घंटी की आवाज सुनाई दी। सभी चूहे खतरा भांप गये कि बिल्ली आ गई है। फिर तो जिसको जहाँ रास्ता मिला वो उधर ही हो लिया। जब बिल्ली वहाँ पहुंची तो उसने देखा कि खाने पीने का बहुत सारा सामान उसके लिए पड़ा था। बिल्ली खुश हो गई और उसने मजे से भर पेट खाना खाया। उसके बाद वो वहाँ से चली गई।

चूहों का जश्न हो गया बेकार – चूहों के जश्न का इस प्रकार अंत होगा किसी ने सोचा न था। पर चूहों को इस बात की खुशी तो थी कि घंटी बजने के कारण उनकी जान बच गई। लेकिन ये सिलसिला यहीं समाप्त नहीं हुआ। बिल्ली के गले में घंटी बांधना चूहों के लिए मुसीबत बनता जा रहा था। बिल्ली जब भी आस–पास से गुजरती। घंटी की आवाज सुन कर सभी चूहे अपने बिल में घुस जाते। इस तरह से उनके सारे काम रूक जाते। वो अपने खाने के लिए भरपेट भोजन का इंतजाम भी नहीं कर पाते। धीरे–धीरे चूहे कमजोर होने लग गए।

बिल्ली को भी इस बात का आभास होने लगा कि उसके गले में बंधी घंटी के कारण चूहों को उसके आने के बारे में पता चल जाता है। तो बिल्ली ने भी अपना दिमाग लगाया। अब जब भी वो चूहों के इलाके में जाती अपनी घंटी को इस तरह पकड़ कर जाती ताकि उसकी आवाज न हो। चूहों ने कहाँ सोचा होगा कि बिल्ली इतना दिमाग लगाएगी। अब बेफिक्र हुए चूहों पर अचानक से हमला हुआ तो उन्हें कुछ समझ नहीं आया। बिल्ली ने मौके का लाभ उठाया और 4 –5 चूहों को वहीं ढेर कर दिया। बिल्ली को भरपेट भोजन मिल गया।

फिर शुरू हुआ सम्मेलन – इस घटना से आहत चूहों ने एक बार फिर से समस्या के हल के लिए एक सम्मेलन किया। धिक्कार है उस चूहे पर जिसने ये विचार दिया था और बिल्ली के गले में घंटी बाँधी थी। लेकिन अब क्या किया जा सकता था? इस बार किसी ने कोई विचार न दिया। ये सम्मेलन बिना किसी निष्कर्ष के ही समाप्त हो गया। अगली सुबह हुई। जैसे ही सब चूहे उठे उनके होश उड़ गए। उनके एकदम सामने वही घंटी पड़ी हुई थी जो बिल्ली के गले में थी। कोई कुछ समझ पाता। इससे पहले ही वो युवा चूहा सबके सामने आया और बोला – हमारी मुसीबत का अंत हो गया है। मैंने उस बिल्ली की जीवन लीला ही समाप्त कर दी।

सब हैरान थे कि ऐसा कैसे हो सकता है? एक छोटा सा चूहा इतनी बड़ी बिल्ली को कैसे मार सकता है। उस युवा चूहे को सबके मन में उठ रहे इस सवाल का आभास हो चुका था। उसने अपनी बात जारी रखी – घंटी बाँधने से लेकर उसे मारने तक मैंने कई बातें सीखी। कभी भी अपने दुश्मन को कमजोर न समझें। वो आपकी सोच से भी आगे निकल सकता है। किसी भी परिस्थिति में हार ना माने। वो आगे निकल जाए तो क्या हुआ, आप भी इतने समर्थ हैं कि उससे आगे निकल सकते हैं। इतना सुनते ही सभी चूहों ने तालियाँ बजानी शुरू कर दी। तभी व आगे बोला – अगर आप कुछ नया नहीं कर सकते या करने की हिम्मत नहीं रखते तो दूसरों को कुछ नया करने और असफल होने पर उसकी निंदा न करें। कम से कम वो अपनी जिंदगी के लिए कुछ तो कर रहे हैं। अगर एक दांव असफल हुआ तो क्या? एक बार फिर प्रयास करें। यह सुनते ही सब चूहों को यह अहसास हो गया कि वो कितने गलत थे और उनकी सोच कितनी सीमित थी।

सिर पर पिता का हाथ

बूढ़ा पिता अपने आई.ए.एस. बेटे के चेंबर में जाकर उसके कंधे पर हाथ रख कर खड़ा हो गया और प्यार से पूछा – दुनिया का सबसे शक्तिशाली इंसान कौन है ? पुत्र ने पिता को बड़े प्यार से हंसते हुए कहा– मेरे अलावा कौन हो सकता है पिता जी ? पिता को इस उत्तर की आशा नहीं थी । उसे विश्वास था कि उसका बेटा गर्व से कहेगा 'पिता जी इस दुनिया के सब से शक्तिशाली इंसान आप हैं, जिन्होंने मुझे इतना योग्य बनाया' । वे चेंबर से बाहर निकलने लगे । उन्होंने एक बार पीछे मुड़ कर पुन: बेटे से कहा – एक बार फिर बताओ इस दुनिया का सब से शक्तिशाली इंसान कौन है ? पुत्र ने इस बार कहा – पिता जी आप हैं इस दुनिया के सब से शक्तिशाली इंसान । पिता सुनकर दंग रह गए उन्होंने कहा – अभी तो तुम अपने आप को इस दुनिया का सब से शक्तिशाली इंसान बता रहे थे और अब तुम मुझे बता रहे हो ।

पुत्र ने हंसते हुए उन्हें अपने सामने बिठाते हुए कहा – पिताजी उस समय आप का हाथ मेरे कंधे पर था, जिस पुत्र के कंधे पर या सिर पर पिता का हाथ हो वो पुत्र तो दुनिया का सबसे शक्तिशाली इंसान ही होगा ना, बोलिए पिता जी । पिता की आँखे भर आई । उन्होंने अपने पुत्र को कस कर के अपने गले लगा लिया ।

प्रिय भैया/बहनों, पिछले अंक में आपने पढ़ा ' किसी देश में ---- नहीं निकल सकेगा ।' अब इससे आगे पढ़िए -

उचित न्याय

ये कह कर जज ने दस डालर अपनी जेब से बाहर निकाल कर रख दिए और फिर पेन उठाकर लिखना शुरू किया इसके अलावा मैं स्टोर के मालिक पर एक हजार डालर का जुर्माना करता हूं कि उसने एक भूखे बच्चे से अमानवीय व्यवहार करते हुए पुलिस के हवाले किया। अगर चौबीस घंटे में जुर्माना जमा नहीं किया तो कोर्ट स्टोर सील करने का हुक्म दे देगी । जुर्माने की पूर्ण राशि इस लड़के को देकर कोर्ट उस लड़के से माफी तलब करती है। फैसला सुनने के बाद कोर्ट में मौजूद लोगों के आंखों से आंसू तो बरस ही रहे थे, उस लड़के की भी हिचकियां बंध गई। वह लड़का बार बार जज को देख रहा था जो अपने आंसू छिपाते हुए बाहर निकल गये। क्या हमारा समाज और हम अदालत के इस तरह के निर्णय के लिए तैयार हैं? चाणक्य ने कहा है कि यदि कोई भूखा व्यक्ति रोटी चोरी करता पकड़ा जाए तो उस देश के लोगों को शर्म आनी चाहिए ।

प्रिय भैया/बहनों, आइए पढ़ते हैं पिछले अंक में दिए चित्र पर कहानी

अमृत की खोज

एक बहुत बड़ा व्यापारी था । उसके व्यापार डंका सारे देश में बजता था । सुख सुविधा की सारी वस्तुएं उसके पास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थीं । एक दिन उसके मन में अमर होने का विचार आया । अब वह उस जल की तलाश में था जिसे अमृत कहते हैं और जिसे पीने से मानव अमर हो जाते हैं । काफी दिनों तक दुनियाँ में भटकने के पश्चात आखिरकार उस ने वह जगह पा ही ली जहाँ उसे अमृत की प्राप्ति हो । उसके सामने ही अमृत जल बह रहा था । वह अंजलि में अमृत को लेकर पीने के लिए झुका ही था कि तभी एक बूढ़ा व्यक्ति जो उस गुफा के भीतर बैठा था, जोर से बोला, "रुक जा, यह भूल मत करना।" बड़ी दुर्गति की अवस्था में था वह बूढ़ा । उस व्यापारी ने कहा, "तू मुझे रोकने वाला कौन है ?"

तब उस बूढ़े ने उत्तर दिया, "मैं भी अमृत की तलाश सारी दुनियाँ में करता हुआ अंत में इस में गुफा आ गया और मैंने यह अमृत पी लिया । अब मैं मर नहीं सकता पर मैं अब मरना चाहता हूँ । देख लो मेरी हालत । अंधा हो गया हूँ, पैर गल गए हैं, देखो! अब मैं चिल्ला रहा हूँ, चीख रहा हूँ कि कोई मुझे मार डाले लेकिन मुझे मारा भी नहीं जा सकता ।अब प्रार्थना कर रहा हूँ परमात्मा से कि प्रभु मुझे मौत दे ।"

वह व्यापारी चुपचाप गुफा से बाहर वापस लौट आया, बिना अमृत पिए। वह समझ चुका था कि जीवन का आनन्द उस समय तक ही रहता है जब तक हम उस आनन्द को भोगने की स्थिति में होते हैं । इसलिए स्वास्थ्य की रक्षा करना चाहिए । जितना जीवन मिला है उसका का भरपूर आनन्द लीजिये ।

सही चुटकुला

पप्पू - डाक्टर साहब, मैं रोज 50 रुपए की दवा लेकर जा रहा हूँ लेकिन कोई फायदा तो हो नहीं रहा है। डाक्टर - ठीक है, अब से तुम 40 रुपए की दवा ले जाया करो 7 तुम्हें 10 रुपए का फायदा रोज होगा ।

उल्टा-पुल्टा ठीक करो

आप यह सब नौकरी और सीखकर क्या करोगे ? जज, बहुत अच्छी है । चोर, " साहब, आपकी सैलरी तूने चोरी कैसे की ? होते हुए भी घर में मालिक के"

नीचे दी गई अधूरी कहानी को 100 शब्दों में पूरी करो –

एक बार की बात है। एक जंगल में चालाक लोमड़ी थी जो हर किसी जानवर को अपनी मीठी बातों में फंसा कर कुछ न कुछ ले लेती थी या उसका खाना खा लेती थी। उसी जंगल में एक सारस पक्षी रहता था। लोमड़ी ने अपनी चालाकी से उसे दोस्त बनाया और खाने पर घर बुलाया। सारस इस बात पर खुश हुआ और लोमड़ी के घर खाने जाने के आमंत्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

अगले दिन सारस, लोमड़ी के घर खाने पर पहुंचा। उसने देखा लोमड़ी उसके लिए और अपने लिए एक-एक प्लेट में सूप ले कर आयी है। यह देख कर सारस मन ही मन बड़ा दुखी हुआ क्योंकि लम्बे चोंच होने के कारण वह प्लेट में सूप नहीं पी सकता था। लोमड़ी ने चालाकी से सवाल पूछा – मित्र सूप कैसा लग रहा है। सारस ने उत्तर दिया – यह बहुत अच्छा है पर मेरे पेट में दर्द है इसलिए में नहीं पी पाउँगा और वह चला गया।

प्रिय भैया/बहनों, नीचे दिए चित्र को देखकर 150-200 शब्दों की कहानी लिखकर भेजना है।

इस अंक से प्रश्न

1.सबसे प्राचीन भारतीय शल्य चिकित्सक कौन थे ?
2.भारतीय समाज की अंतरात्मा क्या है ?
3.'ईश्वर ने मुझे ही क्यों चुना' किसने कहा ?
4.पांडवों का अज्ञातवास कितने वर्ष का था ?
5.एक किलो बाईट में कितने बाईट होते हैं ?
6.'मन चंगा तो कठौती में गंगा' किसने कहा था ?
7.व्यक्ति घर से मंदिर कितने रुपए लेकर चला था ?
8.मंत्री की समस्या का समाधान किसने किया ?
9.आंवला में कौन सा विटामिन अधिक होता है ?
10.जनवरी मास का अंक किस विषय पर आधारित है ?
11.यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में कैसे बदला जाता है ?
12.सबसे अधिक आक्सीजन देने वाले दो पौधे कौन से हैं ?
13.एक मीटर के एक अरबवें हिस्से को क्या कहते हैं ?
14.सामाजिक समरसता का कार्य आन्दोलन है या स्थाई भाव ?
15.मक्खू विद्या मंदिर द्वारा आर्थिक सहयता किसको दी गई ?

उत्तर दिसम्बर

एक मीटर का अरबवां भाग, रत्तेवाल, अलेक्जेंडर पार्किंस, कन्याकुमारी में, एक बार ही प्रयोग में आने वाला, वेटिकन सिटी, फ्रांस के ट्रेले ने, एक दूसरे का पूरक, इंद्र ने, सर्दियों का, श्री जगदीश महाजन जी ने, 10 लाख, जूट या कागज के, 2022, 70 हजार माइक्रो प्लास्टिक

मोरिंडा के आचार्य दीदियों ने गांवों में जाकर किया अभिभावक संपर्क

MS-Word में Red और Green लाईन क्यों आता है ?

माइक्रोसॉफ्ट वर्ड में जब भी हम कुछ टाइप करते हैं तो कभी-कभी किसी शब्द के नीचे लाल या हरी लाइनें दिखाई पड़ती हैं । इस लाल और हरी लाइनें होने के दो कारण हैं- स्पेलिंग या ग्रामर में गलती होना लेकिन अगर आपने स्पेलिंग और ग्रामर दोनों गलतियां की हैं तो उसमें सिर्फ लाल लाइन ही दिखाई देगी । लाल लाइन हटाने के लिए हमें स्पेलिंग की गलती को ठीक करना होगा । इसके लिए लाल लाइन वाले शब्द पर माउस पर दाईं ओर क्लिक करें और सही स्पेलिंग चुन लें । यदि कोई भी स्पेलिंग न लेना हो तो इग्नोर पर क्लिक कर दें ।इसी प्रकार हरी लाइन भी ठीक की जा सकती है । रेड और ग्रीन लाइन को हटाने के लिए और अपने पेज में स्पेलिंग और ग्रामर की गलती को सही करने के लिए हमें प्रीव्यू मीनू में प्रूफिंग ब्लॉक में जाकर स्पेलिंग और ग्रामर टूल को भी चुनना होगा और उसके बाद हमारे सामने एक स्पेलिंग और ग्रामर का विंडो खुलेगा इसमें हमें स्पेलिंग और ग्रामर की गलती को सही करने के लिए कई ऑप्शन मिलते हैं । जैसे= इग्नोर वन्स, इग्नोर आल, एड टू डिक्शनरी, चेंज, चेंज आल आदि ।इग्नोर वन्स का अर्थ है कि हम उस शब्द को उसी तरह रखना चाहते हैं और उसके नीचे से सिर्फ लाल या हरी लाइन को हटाना चाहते हैं। एड टू डिक्शनरी का उपयोग किसी नये शब्दों को माइक्रोसॉफ्ट वर्ड के डिक्शनरी में जोड़ने के लिए किया जाता है, जैसे - हमने कोई नया शब्द टाइप किया है और उसके नीचे लाल या हरी लाइन आती है तो उस शब्द को हम एड टू डिक्शनरी पर क्लिक करके उसे एम.एस. वर्ड के शब्दकोश में जोड़ सकते हैं जिससे अगली बार उस शब्द को फिर से टाइप करने के बाद उसके नीचे लाल या हरी लाइन न आए । चेंज को किसी गलत स्पेलिंग वाले शब्दों को सही स्पेलिंग वाले शब्दों से बदलने के लिए उपयोग करते हैं । स्पेलिंग और ग्रामर के लिए हम इसकी शॉर्टकट अपने की-बोर्ड से F7 का उपयोग भी कर सकते हैं ।

इलेक्ट्रानिक डाटा मापने का स्केल

हम जानते हैं कि किसी लम्बाई को मीटर, द्रव्यमान को किलोग्राम और समय को सेकण्ड से मापते हैं । इसे MKS सिस्टम के नाम से जाना जाता है । इसी प्रकार इलेक्ट्रानिक डाटा मापने की की इकाइयां इस प्रकार हैं:-

(A) 0 या 1 - 1 बिट

(B) 8 बिट = 1 बाईट

(C) 1024 बाईट = 1 किलो बाईट (KB)

(D) 1024 किलो बाईट (KB) = 1 मेगा बाईट (MB)

(E) 1024 मेगा बाईट (MB) = 1 गीगा बाईट (GB)

(F) 1024 गीगा बाईट = 1 टेरा बाईट (TB)

बर्फ पानी पर क्यों तैरती है ?

हम जानते हैं कि बर्फ पानी का ठोस रूप होती है । अत: उसे भारी होकर पानी में डूब जाना चाहिए । जब कोई भी तरल पदार्थ ठोस बनता है तो उसका आयतन घट जाता है और वह भारी हो जाता है लेकिन पानी के साथ ऐसा नहीं होता। जब पानी ठोस अवस्था के लिए जमकर बर्फ बनता है तो उसका आयतन घटने के बजाय बढ़ जाता है और वह पानी की तुलना में हलकी हो जाती है। इसलिए बर्फ पानी में तैरती रहती है।

सूखने पर खून के धब्बे काले क्यों हो जाते हैं ?

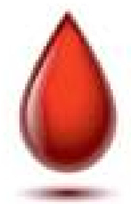

शरीर से निकलने पर खून का काला धब्बा बन जाता है क्योंकि हमारे खून में लाल रंग का हीमोग्लोबिन,ऑक्सीजन और आयरन होता है। जैसे ही खून हमारे शरीर से अलग होता है इसमें ऑक्सीजन की मात्रा धीरे -धीरे कम होने लगती है यानि खून डी आक्सीकृत हो जाता है । खून में आक्सीजन की कमी के कारण इसमें लाल रंग धीरे-धीरे कम होने लगता है । अंतत: यह काला हो जाता है ।

भारत की लग्जरी ट्रेन

भारत की इस लक्जरी ट्रेन में सफर करने वाले यात्रियों को फाइव स्टार जैसी सुविधाएं मिलती हैं। इस ट्रेन को गोल्डन चैरिएट यानी 'स्वर्ण रथ' भी कहा जाता है। इस लग्जरी ट्रेन में कुल 44 एयर कंडीशंड केबिन हैं जिसमें 26 ट्वीन बेड केबिन, 17 डबल बेड केबिन और फिजिकली चैलेंज्ड केबिन हैं और प्रत्येक केबिन में वैनिटी डेस्क, एलसीडी टीवी, इलेक्ट्रिक सॉकेट, 11 सलून, जिम और पारंपरिक मसाज रूम, शाकाहारी और मांसाहारी की सुविधा भी दी गई है। इसके अलावा पूरी ट्रेन वाई-फाई की सुविधा से युक्त है। गोल्डन चैरिएट की आधिकारिक वेबसाइट के मुताबिक, इस ट्रेन के डीलक्स केबिन के लिए एक टिकट की कीमत 3,20,130 रुपये रखी गई है। हालांकि समय के साथ इसमें बदलाव होता रहता है। हालांकि कोरोना महामारी के कारण फिलहाल इस ट्रेन को जनवरी 2022 तक के लिए रद्द कर दिया है।

सोनभद्र

सोन नदी मध्य प्रदेश की एक प्रमुख नदी है। यह भारत के मध्य भाग में बहने वाली एक नदी है। इसे सोनभद्र शिला के नाम से भी जाना जाता है। यमुना के बाद यह गंगा नदी की दक्षिणी उपनदियों में सबसे बड़ी है। इसका उद्गम स्थल मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में अमरकंटक के पास है जो विंध्याचल पहाड़ियों में नर्मदा नदी के स्रोतस्थल से पूर्व में स्थित है। इसे सोनभद्र शिला के नाम से भी जाना जाता है। यह नदी अमरकंटक नामक पहाड़ से निकलकर 350 मील का चक्कर काटती हुई पटना से पश्चिम गंगा में मिलती है। इस नदी का नाम सोन पड़ा क्योंकि इस नदी की रेत पीले रंग की है जो सोने कि तरह चमकती है। इस नदी की रेत भवन निर्माण आदि हेतु बहुत उपयोगी है । यह रेत पूरे बिहार, शहडोल, रीवा व उत्तर प्रदेश के कुछ शहरों में भवन निर्माण के लिए उपयोग में आती है । सोन नदी का उल्लेख रामायण व पुराणो में भी है । इस नदी का पानी मीठा, निर्मल और स्वास्थ्यवर्धक होता है। इसके तटों पर अनेक प्राकृतिक दृश्य बड़े मनोरम हैं। अनेक फारसी, उर्दू और हिंदी कवियों ने नदी और नदी के जल का वर्णन किया है। इस नदी में डिहरी-आन-सोन पर बांध बनाकर 296 मील लंबी नहर निकाली गई है जिसके जल से शाहाबाद, गया और पटना जिलों के लगभग सात लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होती है। यह बाँध 1874 ई. में तैयार हो गया था। इस नदी पर ही एक लंबा पुल, लगभग 3 मील लंबा, डिहरी-ऑन-सोन पर बना हुआ है।

दूसरा पुल पटना और आरा के बीच कोइलवर नामक स्थान पर है। कोइलवर पुल रेल-सह-सड़क पुल है। ऊपर रेलगाड़ियाँ और नीचे बस, मोटर और बैलगाड़ियाँ आदि चलती हैं। इसी नदी पर एक तीसरा पुल भी ग्रैंड ट्रंक रोड पर बनाया गया है। 1965 ई. में यह पुल तैयार हो गया था।

वैसे तो यह नदी शांत रहती है। इसका तल अपेक्षकृत छिछला है और पानी कम ही रहता है पर बरसात में इसका रूप विकराल हो जाता है । पानी मटियाले रंग का, लहरें भयंकर और झाग से भरी हो जाती हैं। तब इसकी धारा तीव्र गति और बड़े जोर शोर से बहती है।

चपाती में पकने के बाद दो परतें क्यों बन जाती हैं ?

चपाती बनाने के लिए प्रारम्भ में जब पानी की सहायता से आटा गूँधा जाता है तब गेहूँ में विद्यमान प्रोटीन एक लचीली परत बना लेती है जिसे लासा या ग्लूटेन कहते हैं। कार्बन-डाई-आक्साइड फैलती है और चपाती के ऊपरी भाग को फुला देती है। जो भाग तवे के साथ चिपका होता है उसकी पपड़ी-सी बन जाती है । इसी प्रकार दूसरी तरफ से सेंकने पर चपाती के दूसरी तरफ भी पपड़ी बन जाती है। इन दो पपड़ियों के बीच बंद कार्बन-डाई-आक्साइड गैस और भाप चपाती की दो अलग-अलग पर्तें बना देती हैं।

आईए ये भी जानें-

1. सूर्य में सर्वाधिक गैस हाइड्रोजन है ।
2.शुक्र ग्रह को सांध्य तारा कहते हैं ।
3. सौरमंडल की आयु 4.6 अरब वर्ष है ।
4. स्पुतनिक-1 पहला कृत्रिम उपग्रह था ।
5.लैंड स्टेनर ने ब्लड ग्रुप की खोज की थी।
6.ध्वनि की तीव्रता डेसीबल में मापी जाती है ।
7.मधुमक्खी पालन को एपीकल्चर कहते हैं ।
8.बॉक्साइट ऐलुमिनियम का प्रमुख अयस्क है ।
9.हेली पुच्छल तारा 76 वर्ष बाद दिखाई देता है ।
10.कैंसर के उपचार में प्रयुक्त उत्कृष्ट गैस रेडान है ।
11.मोनेजाइट बालू में थोरियम खनिज पाया जाता है ।
12.शरीर में सबसे बड़ी अंत:स्रावी ग्रंथि थायराइड है।
13.संसार का विशालतम स्तनधारी व्हेल मछली है ।
14.भू-पटल में सबसे अधिक धातु एल्युमीनियम है।
15.मानव द्वारा सबसे पहले तांबा का प्रयोग किया गया।
16.पृथ्वी और सूर्य के बीच दूरी 15 करोड़ किलोमीटर है ।
17.पृथ्वी से दिखाई देने वाला सबसे चमकीला ग्रह शुक्र है ।
18.सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक पहुँचने में 500 सेकंड लेता है ।
19.भूकंप की तीव्रता को रिक्टर पैमाने द्वारा मापा जाता है ।
20. किसी वेबसाइट के प्रथम पृष्ठ को होमपेज कहा जाता है ।
21.ग्रगोर मैंडल ने आनुवांशिकता के नियमों का प्रतिपादन किया ।
22.रेशम के कीड़े शहतूत वृक्ष की कोमल पत्तियों पर पाले जाते हैं ।
23.स्टेनलैस स्टील आयरन, क्रोमियम,निकिल की मिश्र धातु होती है।
24.मनुष्य की आँख में किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब रेटिना पर बनता है ।
25.सूर्य से पृथ्वी पर ऊष्मा का संचरण विकिरण विधि के द्वारा होता है ।
26.मानव शरीर में पाचन क्रिया अधिकतर छोटी आंत में संपन्न होती है ।
27.बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक मदनमोहन मालवीय थे ।
28.मैग्स्थनीज सेल्यूकस का राजदूत जो चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया ।
29.कंप्यूटर की परमानेंट मैमोरी ROM-Read Only Memory कहलाती है ।
30.डी.एन.ए. की द्विगुणित कुंडली का पता वाटसन और क्रिक ने लगाया ।
31.सामान्य परिस्थितियों में हवा में ध्वनि की गति 332 मी/ सेकंड होती है।
32.कंप्यूटर के जिस भाग को हम स्पर्श कर सकते हैं उसे हार्डवेयर कहते हैं।
33.डायनेमो द्वारा यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत् ऊर्जा में परिवर्तित किया जाता है।

प्रस्तुत कर्ता - श्री बुधिया राम, प्रांत संस्कृत विषय प्रमुख

क्या आप जानते हैं कि विश्व की सबसे ज्यादा समृद्ध भाषा कौन सी है ? अंग्रेजी में 'THE QUICK BROWN FOX JUMPS OVER A LAZY DOG' एक प्रसिद्ध वाक्य है। जिसमें अंग्रेजी वर्णमाला के सभी अक्षर समाहित कर लिए गए हैं। मजेदार बात यह है कि अंग्रेजी वर्णमाला में कुल 26 अक्षर ही उप्लब्ध हैं जबकि इस वाक्य में 33 अक्षरों का प्रयोग किया गया है। जिसमें चार बार O और U, A, E, U तथा R अक्षर का प्रयोग क्रमशः 2 बार किया गया है। इसके अलावा इस वाक्य में अक्षरों का क्रम भी सही नहीं है। जहां वाक्य T से शुरु होता है वहीं G से खत्म हो रहा है। अब ज़रा संस्कृत के इस श्लोक को पढ़िए –

क:खगीघाङ्चच्छिौजाझाज्ञोSटौठीडढण: |
तथोदधीन पफर्बाभीर्मयोSरल्वािशषिां सह ||

पक्षियों का प्रेम, शुद्ध बुद्धि का, दूसरे का बल अपहरण करने में पारंगत, शत्रु–संहारकों में अग्रणी, मन से निश्चल तथा निडर और महासागर का सर्जन करनार कौन ? राजा मय, जिसको शत्रुओं के भी आशीर्वाद मिले हैं। श्लोक को ध्यान से पढ़ने पर आप पाते हैं कि संस्कृत वर्णमाला के सभी 33 व्यंजन इस श्लोक में दिखाई दे रहे हैं वो भी क्रमानुसार। यह खूबसूरती केवल और केवल संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा में ही देखने को मिल सकती है ।

पूरे विश्व में केवल एक संस्कृत ही ऐसी भाषा है जिसमें केवल 'एक अक्षर' से ही पूरा वाक्य लिखा जा सकता है। किरातार्जुनीयम् काव्य संग्रह में केवल 'न' व्यंजन से अद्भुत श्लोक बनाया है और गजब का कौशल्य प्रयोग करके भारवि नामक महाकवि ने थोडे में बहुत कहा है

न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्॥

अर्थात जो मनुष्य युद्ध में अपने से दुर्बल मनुष्य के हाथों घायल हुआ है वह सच्चा मनुष्य नहीं है। ऐसे ही अपने से दुर्बल को घायल करता है वो भी मनुष्य नहीं है। घायल मनुष्य का स्वामी यदि घायल न हुआ हो तो ऐसे मनुष्य को घायल नहीं कहते और घायल मनुष्य को घायल करें वो भी मनुष्य नहीं है। एक और उदहारण है –

दाददो दुद्द्दुद्दादि दादादो दुददीददोः,
दुद्दादं दददे दुद्दे ददाददददोऽददः |

अर्थात दान देने वाले, खलों को उपताप देने वाले, शुद्धि देने वाले, दुष्ट्मर्दक भुजाओं वाले, दानी तथा अदानी दोनों को दान देने वाले, राक्षसों का खंडन करने वाले ने, शत्रु के विरुद्ध शस्त्र को उठाया।

क्या किसी भाषा में केवल 2 अक्षरों से पूरा वाक्य लिखा जा सकता है ? संस्कृत भाषा के अलावा किसी और भाषा में ये करना असंभव है। माघ कवि ने शिशुपालवधम् महाकाव्य में केवल 'भ' और 'र' दो ही अक्षरों से एक श्लोक बनाया है। देखिये –

भूरिभिर्भारिभिर्भीराभूभारैरभिरेभिरे
भेरीरे भिभिरभ्राभैरभीरुभिरिभैरिभाः।

अर्थात– निर्भय हाथी जो कि भूमि पर भार स्वरूप लगता है, अपने वजन के चलते, जिसकी आवाज नगाड़े की तरह है और जो काले बादलों सा है, वह दूसरे दुश्मन हाथी पर आक्रमण कर रहा है। एक और उदाहरण –

क्रोरारिकारी कोरेककारक कारिकाकर।
कोरकाकारकरकःकरीर कर्करोऽकर्रुक॥

अर्थात – क्रूर शत्रुओं को नष्ट करने वाला, भूमि का एक कर्ता, दुष्टों को यातना देने वाला, कमलमुकुलवत, रमणीय हाथ वाला, हाथियों को फेंकने वाला, रण में कर्कश, सूर्य के समान तेजस्वी था। क्या किसी भाषा में केवल तीन अक्षरों से ही पूरा वाक्य लिखा जा सकता है ? यह भी संस्कृत भाषा के अलावा किसी और भाषा में असंभव है । उदहारण –

देवानां नन्दनो देवो नोदनो वेदनिंदिनां ।
दिवं दुदाव नादेन दाने दानवनंदिनः।।

अर्थात – वह परमात्मा (विष्णु) जो दूसरे देवों को सुख प्रदान करता है और जो वेदों को नहीं मानते उनको कष्ट प्रदान करता है। वह स्वर्ग को उस ध्वनि नाद से भर देता है, जिस तरह के नाद से उसने दानव (हिरण्यकशिपु) को मारा था।

अब इस छंद को ध्यान से देखें इसमें पहला चरण ही चारों चरणों में चार बार आवृत्त हुआ है लेकिन अर्थ अलग–अलग हैं जो यमक अलंकार का लक्षण है। इसीलिए ये महायमक संज्ञा का एक विशिष्ट उदाहरण है –

विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा विकाशमीयुर्जतीशमार्गणाः।
विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणाः॥

अर्थात – पृथ्वीपति अर्जुन के बाण विस्तार को प्राप्त होने लगे, जबकि शिव जी के बाण भंग होने लगे। राक्षसों के हंता प्रथम गण विस्मित होने लगे तथा शिव का ध्यान करने वाले देवता एवं ऋषिगण (इसे देखने के लिए) पक्षियों के मार्गवाले आकाश–मंडल में एकत्र होने लगे।

जब हम कहते हैं की संस्कृत इस पूरी दुनिया की सभी प्राचीन भाषाओं की जननी है तो उसके पीछे इसी तरह के खूबसूरत तर्क होते हैं। यह विश्व की अकेली ऐसी भाषा है जिसमें 'अभिधान–सार्थकता' मिलती है। अर्थात अमुक वस्तु की अमुक संज्ञा या नाम क्यों है, यह प्रायः सभी शब्दों में मिलता है। जैसे इस विश्व का नाम संसार है तो इसलिये है क्यूँकि वह चलता रहता है, परिवर्तित होता रहता है – संसरतीति संसारः गच्छतीति जगत् आकर्षयतीति कृष्णः रमन्ते योगिनो यस्मिन् स रामः इत्यादि।

Is Handwriting Important?

Many people automatically assume that, in today's high-tech world, handwriting is obsolete. However, this is far from true—handwriting is still an important skill today for several reasons:

• Your handwriting is uniquely you. It is your way of marking your individuality in an increasingly typed world.

• Students with legible writing typically will receive higher grades on tests and essays.

• People might automatically associate poor handwriting with low intelligence/poor education -- no matter how intelligent or well educated the author actually is.

•Good handwriting can also promote self-confidence.

People often assume that calligraphy and handwriting are synonymous, but they're not. In general, calligraphy is comprised of stylized, embellished letters — it's more art than writing, really. Conversely, handwriting refers to the style and technique that you use to jot things down day to day. Handwriting needs to be quicker and more practical than calligraphy. While everyone has their own personal handwriting style, there's always room for improvement! A motivated person of any age can improve their handwriting with regular practice. The key words here are *motivated* and *regular.*

• Older kids (middle school age) with poor handwriting can improve their writing with exercises that build fine motor skills. It is also worthwhile, as a parent or teacher, to explore why the child has poor writing.

•Teens can use fine motor skill exercises too. The handwriting exercises will help teens to slow down and focus on making their letters legible.

•Adults (and teens) can use mobile apps to practice handwriting anywhere.

•Further there is also need to follow some basic conditions for better handwriting:-

1. Use a Nice Pen

The adjective "nice" is subjective — you'll have to hunt to find the pen that works for you! My choice of pen for everyday writing is the Pilot G2 05 because of the stroke width, the grip, and the jet black ink. I also like that it's so responsive; I don't have to exert a lot of pressure on the pen to ensure consistent ink flow.

2. Practice makes perfect:

Handwriting is an art. It is a proficiency that can be acquired with a lot of practice. Making this activity interesting is not very hard. There are many handwriting-based games and fun handwriting practise worksheets available online.

3.Strengthen Fine Motor Skills

Increasing hand strength and finger dexterity can help the child get more control over the pencilor pen (and hopefully improve handwriting as a result). Strengthening fine motor skills should also help improve endurance of writing tasks.

Encourage the child to get involved with general household tasks that will use hand and finger muscles may help strengthen the hands - tasks like cutting with scissors, using a screwdriver, helping dad sort nails and screws in the garage, sewing and knitting....But instead of doing the playful activities that younger kids do, call it a "hand exercise program".

4. Patience, patience, and more patience:

Every child has potential. Some take a little longer than the others. Patience plays a huge role in this handwriting-honing process.

Children have a low attention span and get easily distracted if they do not get something right at the first shot.

Be it a game, a challenge or an activity, a child must be provided with a new stimulus often to encourage him or her to try again... and try harder to improve their handwriting.

भारत की विश्व को देन

भारत वह देश है जो अपने आप में हर दृष्टि से सम्पूर्ण है । आप चाहें तो भौगोलिक परिस्थितियों से देखें या एतिहासिक परिस्थितियों से देखें या फिर विश्व के प्रति भारत की देन के हिसाब से, भारत सदैव विश्व गुरु रहा है । भारत दो शब्दों से मिलकर बना है 'भा' और 'रत' । भा का अर्थ होता है ज्ञान और रत का अर्थ होता है लीन रहना अर्थात ज्ञान में लीन रहने वाला । भारत सदैव ज्ञान में लीन रहा है और विश्व गुरु बनने के पीछे भी यही कारण है । गुरु का अर्थ होता है देने वाला और भारत ने विश्व को बहुत सी वस्तुएं और सिद्धांत दिए हैं । छोटी बड़ी आवश्यक, दैनिक जीवन से जुड़ी वस्तुएं । विश्व सदैव हमारा ऋणी है इन देनों के लिए ।

आरम्भ से देखा जाए तो भारत ने विश्व को सबसे समृद्ध भाषा संस्कृत दी है । संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसके व्याकरण में कोई भी अपवाद नहीं है । जो रचना महर्षि पाणिनि ने व्याकरण बनाते समय की तब से अब तक संस्कृत में कोई भी सुधार की आवश्यकता नहीं हुई । आज संस्कृत को इस कंप्यूटर युग में देखा जाये तो संस्कृत का अल्गोरिथम सभी भाषाओं में सबसे अच्छा है, इसलिए कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए संस्कृत सबसे उपयुक्त भाषा है । संस्कृत ब्राह्मी लिपि में लिखी जाती है ।

संस्कृत के बाद हिंदी भाषा का उद्भव हुआ जो कि देवनागरी लिपि में लिखी जाती है । विश्व की जितनी भी मूल भाषाएं हैं, जैसे फ्रेंच, स्पेनिश, डच, आदि (अंग्रेजी को छोड़कर क्योंकि अंग्रेजी मूल भाषा नहीं है) भाषा के विशेषज्ञ मानते है कि संस्कृत से ही उन सभी भाषाओं का जन्म हुआ है । अब लिपि की बात हो रही है तो स्पष्ट है कि विश्व को लिखना भी भारत ने सिखाया । जब कुछ लिखा जाता है तो उसके लिए कागज , धातु पत्र , दीवार आदि पर लिखा जाता है पर कागज पर लिखना सबसे सरल होता है । अत: अब जब लिखने कि बात हो रही है तो यह जानकर गर्व होगा कि कागज का अविष्कार भी भारत में हुआ, यह बात चीनी यात्री ह्वेनसांग (भारत यात्रा 629-644) के दस्तावेजों से स्पष्ट हुयी है । मुंज और सल के पौधों को मिलाकर उसका उपयोग कागज बनाने के लिए किया जाता था । चीनियों ने यह कला भारत से सीख कर विश्व को दी है ।

अगर विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो भारत विज्ञान के क्षेत्र में भी सबसे अग्रणी रहा है । स्वास्थ्य को सही रखने हेतु आचार्य चरक ने 'चरक संहिता' की रचना की है । उसमे आयुर्वेद से सभी बिमारियों का उपचार करने का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है । रसोई में काम आने वाले मसालों अर्थात औषधियों का उपयोग किस मात्रा में करने से कौन सा रोग दूर होता है सब बताया गया है । महर्षि वाग्भट्ट ने बताया कि जीवन शैली कैसे होनी चाहिए, कितनी मात्रा में जल लेना चाहिए, कैसे जल पीना चाहिए इत्यादि का विस्तार पूर्वक विवरण अष्टांगसंग्रह और अष्टांगहृदयसंहिता में दिया है । उदाहरणार्थ महर्षि वाग्भट ने कहा था कि भोजन बनाते समय सूर्य का प्रकाश और पवन का स्पर्श आवश्यक है और हमारे गावों में भोजन ऐसे ही पकाया जाता है, जापानियों ने अरबों रुपये खर्च कर के बताया है कि खुले में भोजन बनाने से सम्पूर्ण पौष्टिक तत्व भोजन में आते है ।

आयुर्वेद में सभी बिमारियों का उपचार है । आज की एलोपैथी और आयुर्वेद का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि एलोपैथी में सिर्फ बीमारी से लड़ा जाता है पूर्णतया इलाज नहीं होता। चिकित्सा विज्ञान की सबसे मुश्किल शाखा शल्य चिकित्सा (सर्जरी) होती है, वह भी विश्व को भारत की ही देन है । आचार्य सुश्रुत ने 'सुश्रुत संहिता' में शल्य चिकित्सा की विधि का वर्णन विस्तारपूर्वक किया है । आचार्य सुश्रुत ने 125 उपकरणों का उल्लेख सुश्रुत संहिता में किया है जिनसे शल्य चिकित्सा की जाती थी और आज भी उन 125 उपकरणों का प्रयोग हो रहा है । शल्य चिकित्सा का एक और मुश्किल भाग है प्लास्टिक शल्य चिकित्सा वह भी भारत की देन है । एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट होती है - 1770 ई. में एक राजा था हैदर अली । वह कर्नाटक का राजा था । अंग्रेजों ने कर्नाटक को अपने अंतर्गत मिलाने के लिए हैदर अली पर खूब आक्रमण किए परन्तु हर बार अंग्रेजों को मुंह की खानी पड़ी । 1775 ई. में प्रो.कूट भारत में अधिकारी बनकर आया । उसने भी हैदर अली पर आक्रमण किया हैदर अली ने उसे पराजित कर उसकी नाक काट दी । वह कटी नाक लेकर वापस आ रहा था तो बेलगाम के एक वैद्य ने उसकी दशा पर दया कर के उसकी नाक प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ दी । इस घटना का विवरण प्रो. कूट ने ब्रिटिश सभा में किया, तब ब्रिटिश दल भारत उस वैद्य के पास आया और पूछा कि यह विद्या आपने कहाँ से सीखी तब उसने बताया कि यह कार्य मैं क्या कोई भी वैद्य कर सकता है । तब प्रो. कूट ने यह विद्या पूना में सीख कर इंग्लैंड में सिखाई । यह सब जानकरी प्रो. कूट ने अपनी डायरी में लिखी है । टीकाकरण की शुरुआत भी भारत में ही हुई । डॉ. ओलिव ने अपनी डायरी में लिखा है कि जहाँ विश्व में लोग चेचक से मर रहे थे वहीं भारत में चेचक नगण्य था और यहाँ इसके लिए टीकाकरण किया जाता था । यह घटना 1710 की कलकत्ता की है । ये तो कुछ ही उदाहरण हैं जो ये बताते हैं कि भारत ज्ञान विज्ञान कितना समृद्ध था और यह ज्ञान भारत में लाखों वर्षों से चला आ रहा है । इन सब घटनाओं का पता विदेशी यात्रियों के विवरण से चलता है । अब थोड़ा तकनीक की ओर देखते हैं । भारत ने विश्व को लोहा (इस्पात या स्टील) बनाना सिखाया । 1795 में एक अंग्रेज अधिकारी ने सर्वेक्षण किया और अपनी यात्रा विवरण में लिखा है - 'भारत में इस्पात का काम कम से कम पिछले 1500 वर्षों से हो रहा है । पश्चिमी, पूर्वी, व दक्षिणी भारत में 15000 छोटे बड़े कारखाने चल रहे हैं।

शेष अगले अंक में

गणित की पहेलियां

एक आदमी घर से कुछ धन लेकर चला । वह 4 मंदिरों में जाता है । पहले मंदिर में प्रवेश करते ही उस का धन दोगुना हो जाता है तो वह 16 रूपए मंदिर में चढ़ा देता है । दूसरे मंदिर में प्रवेश करते ही उसका शेष धन फिर दोगुना हो जाता है तो वह 16 रूपए दूसरे मंदिर में चढ़ा देता है । तीसरे मंदिर में प्रवेश करते ही उस का शेष धन फिर दोगुना हो जाता है तो वह 16 रूपए तीसरे मंदिर में चढ़ा देता है ।चौथे मंदिर में प्रवेश करते ही उस का शेष धन फिर दोगुना हो जाता है तो वह 16 रूपए चौथे मंदिर में चढ़ा देता है और खाली हाथ हो जाता है। तो अब आप बतायें कि वह व्यक्ति घर से कितना धन ले कर चला था ?

1.मान लिया कि वह व्यक्ति घर से a रुपए लेकर चला ।

2. दी हुई पहेली के अनुसार पहले मंदिर में उसके रुपए दूने अर्थात 2a हो गए । 16 रुपए चढ़ाने के बाद उसके पास शेष रुपए = 2a – 16

3.इसी प्रकार दूसरे मंदिर में शेष राशि के दूने अर्थात 2(2 a – 16) हुए और 16 रुपए चढ़ाने के बाद शेष राशि

=2(2a - 16) - 16 = 4a - 32 - 16 = 4a - 48

4. तीसरे मंदिर में शेष राशि

= 2(4a – 48)-16 = 8a - 96 - 16 = 8a - 112

5.चौथे मंदिर में शेष राशि

= 2(8a – 112)-16 = 16a – 224 – 16 = 16a - 240

6.दी हुई पहेली के अनुसार व्यक्ति के पास चौथे मंदिर के बाद कोई रुपए नहीं बचे अर्थात

16a – 240 = 0 या 16a = 240 या a = 240/16 = 15

7.वह व्यक्ति घर से मंदिर 15 रुपए लेकर चला था ।

ईश्वर का गणित

एक बार दो आदमी एक मंदिर के पास बैठे गपशप कर रहे थे । वहां अंधेरा छा रहा था और बादल मंडरा रहे थे ।थोड़ी देर में वहां एक आदमी आया और वो भी उन दोनों के साथ बैठकर गपशप करने लगा । कुछ देर बाद उस आदमी को भूख लगी । उन दोनों को भी भूख लगने लगी थी । पहला आदमी बोला मेरे पास 3 रोटियाँ हैं, दूसरा बोला मेरे पास 5 रोटियाँ हैं, हम तीनों मिल बांट कर खा लेते हैं।

उसके बाद प्रश्न यह था कि 8 (3+5) रोटियाँ तीन आदमियों में कैसे बांटी जाएं ? पहले आदमी ने राय दी कि ऐसा करते हैं कि हर रोटी के 3 टुकड़े करते हैं अर्थात 8 रोटी के 24 टुकड़े (8 X 3 = 24) हो जाएंगे और हम तीनों में 8 - 8 टुकड़े बराबर बराबर बंट जाएंगे। तीनों को उसकी राय अच्छी लगी और 8 रोटियाँ के 24 टुकड़े करके प्रत्येक ने 8 - 8 रोटी के टुकड़े खाकर भूख शांत की और फिर बारिश के कारण मंदिर के प्रांगण में ही सो गए ।

सुबह उठने पर तीसरे आदमी ने उनके उपकार के लिए दोनों को धन्यवाद दिया और प्रेम से 8 रोटियाँ के टुकड़ों के बदले दोनों को उपहार स्वरूप 8 सोने की गिन्नी देकर अपने घर की ओर चला गया । उसके जाने के बाद दूसरे आदमी ने पहले आदमी से कहा हम दोनों 4 - 4 गिन्नी बांट लेते हैं । पहला आदमी बोला नहीं मेरी 3 रोटियाँ थीं और तुम्हारी 5 रोटियाँ थीं, अतः मैं 3 गिन्नी लुंगा, तुम्हें 5 गिन्नी रखनी होगी । इस पर दोनों में बहस होने लगी । इसके बाद वे दोनों समाधान के लिये मंदिर के पुजारी के पास गए और उन्हें समस्या बताई तथा समाधान के लिए प्रार्थना की ।

पुजारी जी भी असमंजस में पड़ गए कि दोनों दूसरे को ज्यादा देने के लिये लड़ रहे हैं । पुजारी ने कहा कि तुम लोग ये 8 गिन्नियाँ मेरे पास छोड़ जाओ और मुझे सोचने का समय दो, मैं कल सवेरे जवाब दे पाऊंगा । पुजारी को दिल में वैसे तो दूसरे आदमी की 3-5 की बात ठीक लग रही थी पर फिर भी वह गहराई से सोचते-सोचते गहरी नींद में सो गया। कुछ देर बाद उसके सपने में भगवान जी प्रगट हुए तो पुजारी ने सब बातें बताई और न्यायिक मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की और बताया कि मेरे ख्याल से 3 - 5 बंटवारा ही उचित लगता है ।

भगवान मुस्कुरा कर बोले- नहीं, पहले आदमी को 1 गिन्नी मिलनी चाहिए और दूसरे आदमी को 7 गिन्नी मिलनी चाहिए । भगवान की बात सुनकर पुजारी अचंभित हो गया और अचरज से पूछा - प्रभु, ऐसा कैसे ? भगवन फिर एक बार मुस्कुराए और बोले - इसमें कोई शंका नहीं कि पहले आदमी ने अपनी 3 रोटियों के 9 टुकड़े किये परंतु उन 9 में से उसने सिर्फ 1 बांटा और 8 टुकड़े स्वयं खाया अर्थात उसका त्याग सिर्फ 1 रोटी के टुकड़े का था इसलिए वो सिर्फ 1 गिन्नी का ही हकदार है । जबकि दूसरे आदमी ने अपनी 5 रोटियों के 15 टुकड़े किये जिसमें से 8 टुकड़े उसने स्वयं खाऐ और 7 टुकड़े उसने बांट दिए । इसलिए वो न्यायानुसार 7 गिन्नी का हकदार है ।

प्रश्न - 8 को लिखो 8 बार और उत्तर आये 1000, कैसे ?

उत्तर - 888 + 88 + 8+ 8+ 8 = 1000

प्रश्न - 1 से 100 के बीच कुल कितने 8 के अंक आते है ?

उत्तर - 8 ,18 ,28 ,38 ,48 ,58 ,68 ,78 ,80 ,81 ,82 ,83 ,84 ,85 ,86 , 87 ,88 ,89 ,98 = 20 बार

वैदिक गणित एक चमत्कारी प्राचीन विद्या

वैदिक गणित का नाम किसी पहचान का मोहताज नहीं है । इस विद्या को हम लोगों ने ही कोई महत्व नहीं दिया जबकि ये विद्या हमारे ऋषि मुनियों की हजारों सालों की तपस्या का परिणाम थी जो उन्होंने वैदिक अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, समतल तथा गोलीय त्रिकाणमितीय, समतल तथा घन ज्यामिति (वैश्लेषिक), ज्योतिर्विज्ञान, समाकल तथा अवकल कलन आदि के रूप में सूत्र बनाए । ये सूत्र इतने प्रभावी होते थे कि आज के लोगों को वो किसी चमत्कार से कम नहीं मालूम होते । लेकिन हम हैं कि विदेशी एजुकेशन सिस्टम को अपनाने में लगे हुए हैं । भारत के शिक्षा शास्त्रियों का भी यही विश्वास है कि असली ज्ञान-विज्ञान वही है जो इंग्लैंड-अमेरिका से आता है जबकि भारत का गणित-ज्ञान यूनान और मिस्र से भी पुराना बताया जाता है । शून्य और दशमलव तो भारत की देन हैं ही । कहते हैं कि यूनानी गणितज्ञ पाईथागोरस का प्रमेय भी भारत में पहले से ज्ञात था ।

वैदिक विधि से बड़ी संख्याओं का जोड़-घटाना और गुणा-भाग ही नहीं, वर्ग और वर्गमूल, घन और घनमूल निकालना भी संभव है । वैदिक गणित कम से कम ढाई से तीन हजार साल पुरानी है । उस में मन ही मन हिसाब लगाने के 16 सूत्र बताये गये हैं जो साथ ही सीखने वाले की स्मरणशक्ति भी बढ़ाते हैं । वैदिक गणित हमारी अपनी प्राचीन गणित है जिसके माध्यम से हम मात्र कुछ क्षणों में अपने कठिन से कठिन सवाल का हल पा सकते हैं, लेकिन हम किसी भी तरह की गणना के लिए पूरी तरह से कैल्कुलेटर के अभ्यस्त हो गए हैं, जो कि पश्चिम जगत की खोज है। अगर हम अतीत में जाएं तो वह काल न तो कंप्यूटर का था न कैल्कुलैटर का, आज से सैकड़ों साल पहले के समय की जो बात हमारे दिमाग में सबसे पहले आती है वह है वैदिक काल। हमारे चार वेद हैं और वैदिक गणित अथर्ववेद का ही एक भाग है।

ऐसा कहा जाता है कि बगदाद के राजा ने उज्जैन के एक विद्वान को अपने यहाँ विज्ञान और गणित पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया था। उस राजा ने कई भारतीय पुस्तकों का अरबी में अनुवाद भी करवाया। इसके बाद यही पद्धति 11 वीं शताब्दी में यूरोप जा पहुँची। एक इस्लामिक विद्वान अल-बरुनी भारतीय विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत आया। भारत में वह तीस साल तक रहा और उसने कई किताबें भी लिखी जिसमें से हिसाब-ए-हिंदी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है।

जगद्गुरू शंकराचार्य भारती कृष्ण तीर्थ महाराज ने वर्ष 1911 से 1918 तक वैदिक गणित पर शोध किया और इसे पुर्नस्थापित किया। वैदिक गणित एक तरह से 16 सूत्रों पर आधारित है। इन सूत्रों को आप चाहें तो एक तकनीक या ट्रिक भी कह सकते हैं। कई लोग तो इसे जादुई ट्रिक भी कहते हैं। इस तकनीक की मदद से सवाल के साथ ही उसका जवाब भी हमारे दिमाग में आ जाता है। हम इसे दूसरे शब्दों में इस तरह कह सकते हैं वैदिक गणित वह विधा है जिसकी मदद से हम सवाल में ही छुपे जवाब का पता लगा सकते हैं।

अब जरा एक सरल से गणितीय सूत्र पर एक निगाह डालें। उदाहरण के लिए हमें 105 गुणा 107 का हल निकालना है। तो वैदिक गणित की मदद से इसे इस तरह हल करेंगे- $105 \times 107 = 1 \times (1 \times 1)/12\ (5+7)/35\ (5 \times 7) = 11235$

अगर हमें 12345×11 का हल निकालना है तो वैदिक गणित की मदद से इसे इस तरह हल करेंगे $12345 \times 11 = 1/3\ (1+2)\ 5\ (2+3) 7\ (3+4)\ 9\ (4+5) = 135795$

इस तरह हम सवाल को एक निश्चित विधि से विभाजित कर उसका उत्तर उसके अंदर से ही हासिल कर सकते हैं। क्या यह जादू नहीं है। यह दुर्भाग्य की बात है कि भारत में 90 प्रतिशत लोग इस जादुई गणित से परिचित नहीं है।

वैदिक गणित के माध्यम से कोई भी विद्यार्थी गणित से संबंधित किसी भी सवाल का हल बजाय कुछ मिनटों के मात्र कुछ क्षणों में ही हासिल कर सकता है, इससे उसका समय भी बचेगा और परीक्षा में वह ज्यादा अंक भी हासिल कर सकता है। इस विधि के माध्यम से कोई भी विद्यार्थी जोड़, बाकी घटाव, वर्ग, वर्गमूल और घन मूल आदि सवालों को बहुत संक्षिप्त तरीके कम समय में कर सकता है। किसी भी विद्यार्थी के लिए परीक्षा में 5 या 10 अंकों का अंतर बहुत मायने रखता है खासकर उनके लिए जो कॉलेज में प्रवेश लेना चाहते हैं।

मां और बेटी

एक सौदागर राजा के महल में दो गायों को लेकर आया – दोनों ही स्वस्थ, सुंदर व दिखने में लगभग एक जैसी थीं। सौदागर ने राजा से कहा – महाराज, ये गायें माँ – बेटी हैं परन्तु मुझे यह नहीं पता कि माँ कौन है व बेटी कौन क्योंकि दोनों में खास अंतर नहीं है। मैंने अनेक जगह पर लोगों से यह पूछा किंतु कोई भी इन दोनों में माँ – बेटी की पहचान नहीं कर पाया । बाद में मुझे किसी ने यह कहा कि आपका बुजुर्ग मंत्री बेहद कुशाग्र बुद्धि का है और यहाँ पर मुझे अवश्य मेरे प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा । इसलिए मैं यहाँ पर चला आया – कृपया मेरी समस्या का समाधान करवाएं ।

यह सुनकर सभी दरबारी मंत्री की ओर देखने लगे । मंत्री अपने स्थान से उठकर गायों की तरफ गया। उसने दोनों का बारीकी से निरीक्षण किया किंतु वह भी नहीं पहचान पाया कि वास्तव में कौन मां है और कौन बेटी ? अब मंत्री बड़ी दुविधा में फंस गया । उसने सौदागर से एक दिन की मोहलत मांगी। घर आने पर वह बेहद परेशान रहा । उसकी पत्नी इस बात को समझ गई। उसने जब मंत्री से परेशानी का कारण पूछा तो उसने सौदागर की बात बता दी।

यह सुनकर पत्नी बोली –अरे, बस इतनी सी बात है – यह तो मैं भी बता सकती हूँ । अगले दिन मंत्री अपनी पत्नी को वहाँ ले गया जहाँ गायें बंधी थीं। मंत्री की पत्नी ने दोनों गायों के आगे अच्छा भोजन रखा। कुछ ही देर बाद उसने माँ व बेटी में अंतर बता दिया । लोग चकित रह गए। मंत्री की पत्नी बोली – पहली गाय जल्दी जल्दी खाने के बाद दूसरी गाय के भोजन में मुंह मारने लगी और दूसरी वाली ने पहली वाली के लिए अपना भोजन छोड़ दिया, ऐसा केवल एक मां ही कर सकती है यानि दूसरी वाली माँ है। माँ ही बच्चे के लिए भूखी रह सकती है, माँ में ही त्याग, करुणा, वात्सल्य, ममत्व के गुण विद्यमान होते हैं ।

कढ़ी, नगर, सेनानी, कागज,डालडा, जहाज, कटक, आराम,
जमाना, जहाज, चीकू, बलम

प्रिय भैया-बहनों, नीचे दिए शब्दों पर 150-200 शब्दों की एक कहानी लिखकर भेजना है-

एक संत ने एक विश्वविद्यालय --- एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसका विषय था ।'जीवों पर दया एवं प्राणिमात्र की सेवा ।'--- इस तरह तमाम प्रतिभागियों ने सेवा के विषय में शानदार भाषण दिए। --- संत ने एक ऐसे विद्यार्थी को चुना जो मंच पर बोलने के लिए ही नहीं आया था। --- विद्यार्थी को क्यों चुना जो प्रतियोगिता में सम्मिलित ही नहीं हुआ था।--- द्वार पर एक घायल बिल्ली को रख दिया था। –

पहेलियां

1. पीला तालाब, पीले अण्डे। जल्दी बता नहीं मारूं डण्डे।
2. पैर कटे तो नग बन जाए, सिर कटे तो गर।
   यदि कमर कट जाए मेरी, हो जाता हूं नर।
3. अंत नहीं तो फौज समझिए, आदि नहीं तो बन गया नानी।
   देश प्रेम के लिए न्यौछावर, उनकी बड़ी महान कहानी।।
4. प्रथम नहीं तो गज बन जाऊं, मध्य नहीं तो काज।
   लिखने-पढ़ने वालों से कुछ, छिपा ना मेरा राज।
5. तीन अक्षर का मेरा नाम, उलटा-सीधा एक समान।
   आता हूँ खाने के काम, बूझो तो भाई मेरा नाम?
6. अक्षर तीन का मेरा नाम, हवा में उड़ना मेरा काम।
   उल्टा सीधा एक समान, बूझो तो जानू मेरा नाम ?
7. तीन अक्षर मेरा नाम, उलटा सीधा एक समान।
   सुभाष चन्द्र का मैं हूं धाम, जल्दी बताओ मेरा नाम ?
8. दुम काटो तो काट के रख दें, कटे पेट तो फलों में श्रेष्ठ ।
   सिर काटो तो हे भगवान, थकान मिटाना मेरा काम।
9. अंत कटे तो जमा जोड़ हूं, मध्य कटे तो बनूँ जना।
   आदि कटे तो सबने माना, कैसा आ गया जमाना।
10. तीन अक्षर का नाम, उलटा सीधा एक समान।।
    मध्य कटे जज बन जाऊं, झट सबको पहुंचाऊं।
11. उल्टा कर दो रंग भरूं, सीधा रखो मैं फल हूं।
    बीमारों का दोस्त हूं मैं, देता उन्हें बहुत बल हूं।
12. अन्त हटा दो ताकत हूं, मध्य हटा दो 'बम'।
    हर स्त्री को प्यारा हूं, मतलब मेरा सजन।

प्रिय भैया-बहनों, नीचे दिए चौखानों में अक्षर दिए गए हैं जिनसे नीचे दिए गए शब्द बनाने हैं। 15 मिनट में 60 शब्द ढूंढने वाले भैया-बहन उत्तम व इससे अधिक ढूंढ़ने वाले अति उत्तम होंगे।

L	A	W	A	Y	E	A	R	T	P	E	A	R	M	Y	E	L	L	O	W
O	L	O	L	A	T	E	R	H	E	Y	O	U	N	G	N	E	E	R	I
T	I	M	E	A	R	A	D	I	O	E	R	R	O	R	E	V	A	A	N
H	N	A	G	A	M	E	A	N	P	L	A	C	E	O	R	E	K	N	D
I	E	N	A	M	E	A	N	G	L	D	R	A	W	U	G	L	O	G	R
N	S	E	L	I	F	E	G	E	E	E	E	C	O	P	Y	E	L	E	E
O	T	O	T	A	L	L	R	R	T	E	A	R	L	Y	O	G	A	R	A
U	N	I	Q	U	E	D	Y	M	A	P	R	O	Y	A	L	I	O	N	M
N	I	G	H	T	I	E	T	A	K	E	E	P	A	P	E	R	A	A	E
N	O	T	I	G	E	R	U	N	E	R	A	C	E	N	T	E	R	L	R

LOT	NEST	RACE	YOGA	LEGAL	PEOPLE	UNIQUE	LION
EAR	TEAR	COPY	NIGHT	EARLY	RUNER	ENERGY	THIN
MAN	WIND	OMAN	LEVEL	ROYAL	ELDER	GERMAN	TIME
LEG	LINE	AREA	ARMY	RADIO	ERROR	DEEPER	WAY
NOT	TAKE	GAME	REAR	PLACE	GROUP	YELLOW	PEAR
LAW	LATE	MEAN	TOTAL	DRAW	GERNAL	YOUNG	KEEP
LIFE	LEAK	NAME	TIGER	ANGRY	CENTER	DREAM	LATER
EYE	DEEP	YEAR	MEAN	AKOLA	WOMAN	ORANGE	THING

‘अंतर्राष्ट्रीय एड्स दिवस’ का खमाणों, अबोहर व बैगोवाल में आयोजन

खमाणों, अबोहर व बैगोवाल विद्या मंदिरों में ‘अंतराष्ट्रीय एड्स दिवस’ के बारे में बच्चों को जानकारी दी गई कि 1 दिसम्बर का दिन पूरी दुनिया में हर साल लोगों को एड्स के बारे में जागरुक करने के लिये मनाया जाता है। इस अवसर पर छात्रों ने पोस्टर बनाए और इस सम्बन्धी उपयोगी जानकारी सांझा की ।

आइए जानते हैं सबसे ज्यादा ऑक्सीजन देने वाले पौधों के बारे में

घर की सुदंरता बढ़ाने के लिए अधिकतर लोग पौधों का प्रयोग करते हैं। रंग बिरंगे पौधे न सिर्फ देखने में सुंदर लगते हैं बल्कि आसपास के वातावरण को भी साफ रखते है । आइए जानते हैं कुछ ऐसे पौधों के बारे में जो न सिर्फ घर को सजाने के काम आते हैं बल्कि आपके आसपास मौजूद जहरीली गैसों को ऑब्जर्व करके ऑक्सीजन का उचित लेवल भी बनाए रखने में सहायता करते हैं।

मनी प्लांट

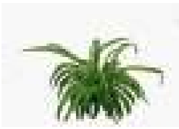
स्पाईडर प्लांट

ऐलो वेरा

एरिका पाम

स्नेक प्लांट

बैंबू

मनी प्लांट– मनी प्लांट ऐसा पौधा है जो बेहद कम रोशनी में भी ऑक्सौजन तैयार करने की क्षमता रखता है। मनी प्लांट बेनजेन, फॉर्मेल्डिहाइड, जाइलीन, टोलुइन और ट्राईक्लोरोएथिलीन जैसी जहरीली गैसों को ऑब्जर्व करने की क्षमता रखता है।

स्नेक प्लांट– स्नेक प्लांट हवा को शुद्ध करने के साथ फॉर्मलडिहाइड, बेंजीन , नाइट्रोजन ऑक्साइड, जाइलीन और ट्राईक्लोरोईथिन जैसे विषाक्त पदार्थों को अवशोषित करता है। इस पौधे की खासियत यह है कि यह रात के समय ऑक्सीजन का उत्पादन ज्यादा करता है।

बैंबू प्लांट– बैंबू का पौधा हवा से टोल्यूनि हटाने में सहायता करता है। जब टोल्यूनि हवा में फैलता है तो यह नाक, आंख और गले में जलन जैसे हानिकारक प्रभाव डालता है। बाकी पौधों की तरह इसका काम भी हवा में पाए जाने वाले बेंजीन, फॉर्मलडिहाइड जैसे विषाक्त पदार्थों को फिल्टर करना होता है। इस प्रकार यह पौधा पर्यावरण के लिए लाभदायक है।

एलोवेरा– आयुर्वेद में एलोवेरा के अनेक लाभों के विषय में बताया गया है। इसकी पत्तियों में वातावरण में मौजूद बेंजीन और फॉर्मलडिहाइड को अब्जॉर्ब करने की बेहतरीन क्षमता है। चूंकि यह पौधा धूप में पनपता है, अतः इसे घर में ऐसी जगह पर रखना चाहिए जहां पर्याप्त धूप आती हो।

स्पाइडर प्लांट– स्पाइडर प्लांट को रिबन प्लांट के नाम से भी पहचाना जाता है। यह पौधा कार्बन मोनोऑक्साइड, बेंजीन और फॉर्मलडिहाइड को छानकर हवा की क्वालिटी में सुधार करता है। इतना ही नहीं, लोग हैप्पी वाइब्स और स्ट्रेस को मैनेज करने के लिए इस पौधे को घर में लगाते हैं।

एरिका पाम– एरिका पाम हवा को शुद्ध करने वाले ऑक्सीजन प्लांट्स में से एक है। यह इंडोर प्लांट हवा में मौजूद खतरनाक गैसों को अब्जॉर्व करने की क्षमता रखता है। इस पौधे की खासियत है कि इसे कम रोशनी और कम पानी में भी उगा सकते हैं।

रामदरबार, चंडीगढ़ में किया गया नेत्र जांच शिविर का आयोजन

श्री हजारीलाल सर्वहितकारी विद्या मंदिर, रामदरबार (चंडीगढ़) में 2 दिसम्बर को महावीर इंटरनेशनल, चंडीगढ़ द्वारा नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया । इस शिविर में नीरज आई हास्पिटल सैक्टर-36 के डाक्टरों ने छात्रों के आंखों की जांच की। जिन छात्रों को कोई समस्या थी उनको समाधान के साथ उनके अभिभावकों को जागरूक किया।

विद्या मंदिर की प्रधानाचार्या श्रीमती अरूणेश शर्मा जी ने डा.और उनकी पूरी टीम का धन्यवाद किया।

नैनो टेक्नालाजी में कोर्सेज और करियर्स

मॉडर्न साइंस में नैनो टेक्नोलाजी एक ऐसी अप्लॉइड साइंस है जिसमें 100 नैनो मीटर से छोटे पार्टिकल्स पर रिसर्च और काम किया जाता है । आपकी सूचना के लिए, एक नैनो मीटर एक मीटर के एक अरबवें हिस्से के बराबर होता है । इन दिनों नैनो टेक्नोलाजी के प्रयोग से जीवन के सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन आ चुके हैं। अगर आप नैनो साइंस में नई-नई जानकारियां प्राप्त कर रिसर्च वर्क करना चाहते हैं तो नैनो टेक्नोलाजी में इन दिनों भारत सहित अन्य कई देशों में करिअर ग्रोथ की बहुत आशाजनक संभावनाएं हैं । आजकल नैनो टेक्नोलाजी का कार्य क्षेत्र बहुत व्यापक है और लगभग प्रत्येक क्षेत्र में इसका प्रयोग हो रहा है । मॉलिक्यूलर बायोलॉजी, इंजीनियरिंग साइंस,मैटीरियल साइंस,केमिस्ट्री, फिजिक्स, मेडिसिन, इंस्ट्रूमेंटेशन,ड्रग डिलीवरी सिस्टम व डिवाइस फेब्रिकेशन में होने वाले प्रत्येक रिसर्च वर्क में कम से कम एक कंपोनेंट नैनो टेक्नोलाजी से जुड़ा होता है ।

नैनो टेक्नोलाजी का क्षेत्र काफी जिज्ञासा पूर्ण होने के बावजूद अनेक चुनौतियों से भरा हुआ है । नैनो टेक्नोलाजी में रिसर्च पर सबसे अधिक फोकस किया जाता है । आजकल देश-दुनिया में नैनो टेक्नोलाजी से संबद्ध विभिन्न क्षेत्रों में करियर ग्रोथ की बहुत आशाजनक संभावनाएं हैं । आप स्टेम सेल डेवलपमेंट, नैनो टॉक्सीकॉलोजी, नैनो मेडिसिन, बायो-इन्फोर्मेटिक्स और नैनो पावर जनरेटिंग सेक्टर जैसी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना करियर शुरू कर सकते हैं ।

हमारे देश के स्टूडेंट्स के लिए नैनो टेक्नोलाजी के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि- स्पेस, प्रॉडक्ट डेवलपमेंट, जेनेटिक्स, हेल्थ इंडस्ट्री, एग्रिकल्चर, एन्वायरमेंट इंडस्ट्री, प्राइवेट रिसर्च इंस्टीट्यूट, बायोटेक्नोलॉजी, फोरेसिंक साइंस में भी इन दिनों बेहतरीन अवसर उपलब्ध हैं । नैनो टेक्नोलाजी में एक्सपर्ट्स को भारत में टेक्सटाइल्स इंडस्ट्री और फार्मास्युटिकल कंपनियों से काफी आकर्षक जॉब ऑफर्स मिलते हैं ।

भारत के मान्यता प्राप्त एजुकेशनल बोर्ड से बढ़िया अंकों के साथ 12 वीं पास करने वाले सभी स्टूडेंट्स नैनो टेक्नोलाजी के बैचलर कोर्सेज में एडमिशन ले सकते हैं और साइंस/ नैनोटेक्नोलाजी और बायोटेक्नोलाजी में बैचलर डिग्री हासिल करने वाले स्टूडेंट्स पोस्ट ग्रेजुएशन कर सकते हैं । नैनो टेक्नोलाजी में रिसर्च और डॉक्टोरल डिग्रीज हासिल करने के लिए स्टूडेंट्स के पास नैनो टेक्नोलाजी या संबद्ध फील्ड में पोस्ट ग्रेजुएशन की डिग्री चाहिए । इच्छुक और टैलेंटेड स्टूडेंट्स इन प्रमुख नैनो टेक्नोलाजी कोर्सेज कर सकते हैं:- बी.एससी., बीटेक, बायोटेक्नोलाजी/ बायोमेडिकल, एम.एससी. - नैनो टेक्नोलॉजी/ नैनो साइंस एंड टेक्नोलाजी, एम.टेक.-नैनो टेक्नोलाजी/ मैटेरियल साइंस/ नैनो मैटेरियल्स, पी.एचडी. नैनो टेक्नोलाजी, पी.एचडी.- नैनो साइंस एंड टेक्नोलाजी।

आई.आई.टी., दिल्ली, आई.आई.टी., कानपुर, इंडियन इंस्टीटयूट आफ साइंस, बैंगलोर, स्कूल आफ नैनो साइंस एंड टेक्नोलाजी, एन.आई.टी.,कालीकट, एमिटी इंस्टीट्यूट आफ नैनो टेक्नोलाजी, एमिटी यूनिवर्सिटी, नॉएडा, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़, अमृता सेंटर्स फार नैनो साइंस, केरल

इन टॉप इंस्टीट्यूट्स से नैनो टेक्नोलाजी के विभिन्न कोर्सेज ज्वाइन कर सकते हैं:-

भारत में नैनो टेक्नोलाजिस्ट के लिए निम्नलिखित विशेष करियर्स/ जॉब प्रोफाइल्स उपलब्ध हैं:-

नैनो टेक्नोलाजिस्ट, रिसर्चर/ रिसर्च साइंटिस्ट, लेक्चरर/ प्रोफेशनल, इंजीनियर- एप्लीकेशन्स/ ऑप्टिकल/ प्रोडक्ट मार्केटिंग/ रिसर्च एंड डेवलपमेंट, साइंटिस्ट/ फूड साइंटिस्ट/ मेडिकल साइंटिस्ट, टेक्निकल प्रोग्राम मैनजर, प्रोडक्ट मार्केटिंग मैनेजर हमारे देश में नैनो टेक्नोलाजी प्रोफेशनल्स इन सेक्टर्स, इंडस्ट्रीज और कंपनियों में सूटेबल जॉब के लिए अप्लाई कर सकते हैं:- फार्मास्यूटिकल्स, मेडिकल सेक्टर, रिसर्च लेबोरेटरीज, फूड सेक्टर- प्रोडक्ट, बायो टेक्नोलाजी, इलेक्ट्रॉनिक्स, मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स/ इंडस्ट्रीज, एनवायरमेंटल सेक्टर, फॉरेंसिक्स, ऑटो एंड एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज

हमारे देश में इन प्रोफेशनल्स को अपने करिअर के शुरू के दिनों में कम से कम 3-4 लाख रुपये सालाना का सैलरी पैकेज मिलता है जो कार्य अनुभव के साथ-साथ लगातार बढ़ता रहता है और कुछ ही वर्षों में ये प्रोफेशनल्स 1-1.5 लाख रुपये मासिक कमाने लगते हैं । इसके साथ ही यदि आप चाहते हैं तो विदेशों मेंभी अच्छे जाब आफर्स उपलब्ध रहते हैं ।

विद्या भारती यू.एस.ए. यूनिवर्सिटी को पछाड़ बना सबसे बड़ा गैर सरकारी पंजीकृत पूर्व छात्रों का संगठन

गत सप्ताह होशियारपुर, हाजीपुर व भोआ संकुलों की पूर्व छात्र परिषद की बैठकें संपन्न हुई जिसमें पूर्व छात्र परिषद के प्रांत प्रभारी जितेन्द्र शर्मा ने कहा कि विद्या भारती यू.एस.ए. यूनिवर्सिटी को पछाड़ कर गैर सरकारी पंजीकृत पूर्व छात्रों का सबसे बड़ा संगठन बन चुका है । आगे उन्होंने कहा कि सर्वहितकारी शिक्षा समिति के 50 वें वर्ष को समर्पित पंजाब के 50,000 पूर्व छात्रों का विद्या भारती पोर्टल पर पंजीकरण करना हमारा लक्ष्य है जिसे पूरा करने के लिए विद्या मन्दिर स्तर पर सभी पूर्व छात्रों की बैठकें की जा रही हैं।

सर्वहितकारी की ओर बढ़े सहायता के हाथ

समाज आधारित शैक्षणिक संगठन सर्वहितकारी की ओर सहायता के हाथ बढ़ रहे हैं । खानपुर विद्या मंदिर के यू.के.जी. के छात्र रिदित के अभिभावक द्वारा इसी कक्षा में पढ़ रही एक छात्र की पूरे वर्ष की फीस देकर सहायता की। मुकेरियां विद्या मंदिर के वं छात्र नकुल महाजन जो कि आजकल पर्थ, वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के बैंक में मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं, ने विद्यालय के प्रति लगाव रखते हुए अपने माता-पिता के द्वारा शिशु वाटिका के विकास के लिए 12000 की राशि का चैक भेंट किया । इसी प्रकार तारागढ़ में पूर्व विधायक श्रीमती सीमा जी के पति श्री विनोद जी ने सीमेंट और रेत दी ।

सर्वहितकारी विद्या मंदिर, मक्खू की पूर्व छात्रा मोनिका को दी गई सहायता राशि

सर्वहितकारी विद्या मंदिर, मक्खू की पूर्व छात्रा मोनिका जो कि हृदय की मरीज है और उसके हृदय में छेद है। उसके ऑपरेशन में कम से कम चार लाख तक का खर्चा आना है । इसमें सर्वहितकारी विद्या मंदिर मक्खू तथा सर्वहितकारी शिक्षा समिति पंजाब प्रांत के सहयोग से पूर्व छात्रा मोनिका को विद्या मन्दिर प्रधानाचार्य श्री बुधिया राम जी तथा प्रधान सतपाल दुआ जी ने 27850 रुपये का चैक दिया गया ।

सर्वहितकारी के आचार्यों के लिए चाइनीस भाषा सर्टिफिकेट कोर्स का शुभारंभ

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत विदेशी भाषा के ज्ञान की अनिवार्यता को समक्ष रख कर विद्या भारती पंजाब द्वारा अध्यापकों के लिए चाइनीस भाषा के प्रशिक्षण का शुभ आरंभ किया गया जिसमें पूरे प्रांत से 50 अध्यापकों ने भाग लिया । इस प्रशिक्षण कार्यशाला की अध्यक्षता विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के महामंत्री देसराज शर्मा ने की। प्रांतीय शैक्षिक प्रभारी प्रेम सिंह खिमटा ने चाइनीज भाषा सीखने की समस्त कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला । सौरभ शर्मा डिप्टी रजिस्ट्रार फॉरेन लैंग्वेजेस (पी.टी.यू) तथा सोनू अग्निहोत्री (चाइनीस भाषा विशेषज्ञ) ने सभी को संबोधित किया तथा प्रथम पाठ का अभ्यास भी करवाया ।

विद्या भारती, मानसा की छात्रा प्रतीक्षा 'भारत को जानो' प्रतियोगिता में क्षेत्रीय स्तर पर रही प्रथम

बनी लोधी विद्या मंदिर के पूर्व प्रबंध समिति के सदस्य दिलावर सिंह जी ने 20,000/- की राशि दान में दी

इन 5 चीजों का करें सेवन

प्रदूषण के कारण सर्दी- जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, आंखों में जलन, खांसी, गले में इंफेक्शन, साइनस, अस्थमा और फेफड़ों से संबंधित समस्या का सामना करना पड़ता है। बदलते मौसम में प्रदूषण से बचाव करना है तो अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जैसे जैसे मौसम में सर्दी बढ़ती है वैसे वैसे हवा में प्रदूषण का स्तर भी बढ़ता जाता है। बढ़ता प्रदूषण ना सिर्फ आंखों को हानि पहुंचाता है बल्कि यह शरीर में पहुंचकर फेफड़ों तक को हानि पहुंचाता है। प्रदूषण के कारण हर उम्र के लोग सांस से संबंधित बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं। इससे बचने हेतु डाइट में ऐसी चीजें लें जिनका सेवन करने से प्रदूषण से होने वाली बीमारियों से बचा जा सके। प्रदूषण का असर कम करने वाले खाद्य पदार्थ -

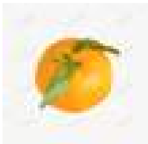

1- **संतरा का करें सेवन:**- विटामिन सी से भरपूर संतरा ना सिर्फ इम्यूनिटी बूस्ट करता बल्कि आपको सेहतमंद भी रखता है। एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर संतरा शरीर को कई तरह की परेशनियों से बचाता है। इस मौसम में संतरा का सेवन आपको सेहतमंद रखेगा।

2- **हरी सब्जियां अधिक खाएं:**- पोषक तत्वों से भरपूर हरी सब्जियों का सेवन करने से शरीर को विटामिन और प्रोटीन मिलते हैं जो स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक हैं। हरी सब्जियां इम्यूनिटी मजबूत करती हैं, साथ ही प्रदूषण से भी बचाव करती हैं।

3- **अदरक का सेवन जरूर करें:**- औषधीय गुणों से भरपूर अदरक आपकी इम्यूनिटी मजबूत करेगी साथ ही प्रदूषण से बचाने में भी मदद करेगी। अदरक का सेवन आप काढ़े या चाय में डालकर कर सकते हैं। अदरक सर्दी-खांसी और कफ से निजात दिलाएगी।

4- **गुड़ का करें सेवन:**- प्रदूषण के असर को कम करने में गुड़ बेहद असरदार है। गुड़ खाने से शरीर का तापमान सामान्य बना रहता है। आयरन से भरपूर गुड़ ब्लड में ऑक्सीजन ठीक तरह से बनाता है। यह प्रदूषण से बचाने में मददगार है। सर्दियों के मौसम में फेफड़ों में जमा कफ को दूर करने के लिए गुड़ बेहतर औषधि है। इसका प्रयोग हम चाय में डालकर भी कर सकते है।

5- **आंवला :-** विटामिन सी से भरपूर आंवला में एंटी ऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं, जो फ्री रेडिकल की सफाई करने में मददगार होते हैं। विटामिन सी इम्यूनिटी को मजबूत करता है साथ ही पॉल्यूशन से भी बचाता है। नियामित रूप से आंवला का सेवन हमें अनेक बीमारियों से बचाएगा।

नारियल के पानी के लाभ

नारियल पानी हमें ठंडक प्रदान करने के साथ अनेक बीमारियों को ठीक करने में भी सहायक होता है। तटवर्ती क्षेत्रों में लोग शुरू से नारियल का प्रयोग खान-पान और सौंदर्य निखारने के लिए करते आए हैं । नारियल का हर हिस्सा किसी न किसी तरह से लाभदायक है । एक नारियल में लगभग 200 मिली. पानी होता है । ये मीठा और ताजगी भरा होता है । साथ ही ये एक लो-कैलोरी ड्रिंक भी है । आइए जानते हैं नारियल पानी के लाभ -

1.नारियल पानी पीने से बाल चमकदार और काले होते हैं।
2.मलेरिया, डेंगू, चिकुनगुनिया, हाई ब्लड प्रेशर ठीक होते हैं।
3.हमारे शरीर का बढ़ा हुआ वजन और कोलेस्ट्रोल कम हो जाता है।
4.इसे पीने से सिर दर्द और डिप्रेशन भी ठीक हो जाती हैं।
5.सिर दर्द से जुड़ी अधिकतर समस्याएं डिहाइड्रेशन के कारण ही होती हैं। ऐसे में नारियल पानी पीने से शरीर को तुरंत इलेक्ट्रोलाइट्स पहुंचाने का का काम पूर्ण होता है ।
6.हैंगओवर से छुटकारा पाने हेतु भी नारियल पानी अच्छा उपाय है।
7.बढ़ती उम्र के प्रभाव को कम करने के लिए भी नारियल पानी का प्रयोग किया जाता है । इसमें मौजूद cytokinins कोशिकाओं और ऊतकों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है ।

स्वास्थ्य के दोहे

1. ठंडा पानी पियो मत, करता क्रूर प्रहार,
करे हाजमे का सदा, ये तो बंटाढार।
2. पानी में गुड़ डालिए, बीत जाए जब रात,
सुबह छानकर पीजिए, अच्छे हों हालात।
3. धनिया की पत्ती मसल, बूंद नैन में डार,
दुखती अंखियां ठीक हों, पल लागे दो-चार।
4. ऊर्जा मिलती है बहुत, पिएं गुनगुना नीर,
कब्ज खतम हो पेट की, मिट जाए हर पीर।
5. प्रात: काल पानी पिएं, घूंट-घूंट कर आप,
बस दो-तीन गिलास है, हर औषधि का बाप।

फिटकरी के लाभ

फिटकरी में एंटी-बैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं। इसके गुणों के कारण फिटकरी का प्रयोग कई कामों के लिए होता है, जैसे पानी को साफ करना, शेव करने के बाद । आइए जानते हैं फिटकरी के 7 लाभों के बारे –

1.गंदगी को साफ करना फिटकरी का बेहतरीन गुण है। इसका प्रयोग पीने के पानी को साफ करने के लिए किया जाता है ताकि पानी में मौजूद कीटाणु समाप्त हो जाएं। इसके अलावा त्वचा की सफाई के लिए भी फिटकरी का उपयोग किया जाता है।

2.रक्त के बहाव को कम करने के लिए फिटकरी बहुत काम की चीज है। किसी चोट के कारण रक्त का बहाव हो तो उस स्थान पर फिटकरी लगाना लाभदायक होता है। इसके अलावा फिटकरी लगाने से बैक्टीरिया भी नहीं पनपते।

3.अगर आप यूरिन संबंधी समस्या या इंफेक्शन से परेशान हैं तो फिटकरी के पानी से संबंधित स्थान की सफाई करना बेहतर होगा। इससे बैक्टीरिया खत्म हो जाएंगे और इंफेक्शन फैलने के बजाए वह ठीक हो जाएगा।

4.त्वचा के दाग धब्बे हटाने के लिए फिटकरी एक अच्छा उपाय है। आप चाहें तो नियमित रूप से चेहरे पर फिटकरी से मसाज करें या फिर फिटकरी के पानी से चेहरे को साफ करें। त्वचा बेदाग हो जाएगी।

5.अगर आपके दांतों में दर्द है और आपको उससे निजात नहीं मिल रही तो फिटकरी का पाउडर संबंधित स्थान पर लगाएं। ऐसा करने पर आपको दांत दर्द से निजात मिल जाएगी।

6.शरीर पर जमी गंदगी और कीटाणुओं को समाप्त करने के लिए फिटकरी के पानी से नहाना बहुत अच्छा उपाय है। यह आपके शरीर और पसीने की बदबू को भी कम करेगा।

7.सर्दी के कारण पैदा होने वाली समस्याओं जैसे – खांसी, बलगम आदि में फिटकरी का चूर्ण शहद में मिलाकर लेने से राहत मिलती है। सांस संबंधी समस्या में भी इसे भूनकर खाना फायदेमंद होता है।

शरीर की सभी नसों को खोलने के उपाय

दिन में मात्र एक बार यह साधारण सा उपाय करिए, सिर के बाल से पैर की उंगली तक सारी नसें मुक्त होने का आपको स्पष्ट अनुभव होगा । सिर से पैर तक एक तरह से करंट का अनुभव होगा । हाथ पैर में होने वाली झंझनाहट तुरंत बंद हो जाती है । पुराना घुटनों का दर्द और कमर, गर्दन या रीड की हड्डी में कोई नस दबी या अकड़ गई है तो वह पूरी तरह से ठीक हो जाएगी, पुराना एड़ी का दर्द भी ठीक हो जाएगा। पैर में फटी एड़ियां और डैड स्किन रिमूव हो जाती है और पैर कोमल हो जाते हैं ।

यह उपाय करने के लिए हमें घर में ही उपलब्ध कपूर और नींबू, ये दो चीजें चाहिये। इस उपाय को करने के लिए डेढ़ से दो लीटर गुनगुना पानी लें, जिसका तापमान पैर को सहन होने जितना हो, उसमें आधे नींबू का रस निचोड़े और फिर नींबू को भी उस पानी में डाल दें । फिर कपूर की तीन गोलियां बारीक पीस कर उसका पाउडर बना लें, यह भी उस पानी में मिला लें, फिर पांच से दस मिनट तक पैरों को इस पानी में डाल कर रखें।

जैसे ही आप पैरों को पानी में डालेंगे, तो आपको इससे सिर से पैर तक एक तरह से करंट का अनुभव होगा। आपके सिर के बालों से पैर तक की सारी नसें मुक्त होने का स्पष्ट रूप से अनुभव होगा। इसका कारण यह है कि हमारे पैरों में 272 प्रकार के प्रेशर पॉइंट होते हैं, जो हमारे शरीर की सभी नसों के साथ जुड़े होते हैं। यह नींबू और कपूर वाला गुनगुना पानी इन 272 प्रकार के प्रेशर पॉइंट्स को मुक्त कर देता है जिससे शरीर की सारी नसें एकदम से रीएक्टिवेट हो जाती हैं।

और पूरी तरह से मुक्त हो जाती हैं । इस उपाय में सिर्फ पांच से दस मिनट तक इस पानी में पैर डाल कर रखने हैं और यह दिन में कभी भी सुबह या शाम को कर सकते हैं। इससे जिन लोगों को माइग्रेन की तकलीफ हो वह भी, पानी में पैर रखने के साथ ही बन्द हो जायेगी। अगर स्नायु अकड़ गये हों या शरीर दर्द कर रहा हो तो यह उपाय करके देखिए।

नोट:– इसका कोई साइड इफैक्ट नहीं है और यह उपाय सरल रूप से किया जा सकता है। यह उपाय पांच दिन करना है। यह उपाय दिखने में तो सरल लगता है मगर इसका परिणाम बहुत ही अच्छा और असरदार होता है।

गर्म पानी पीने के लाभ

1.कब्ज होने पर नियमित रूप से सुबह गर्म पानी पीने से लाभ होता है।

2.चेहरे पर चमक आती है।

3.पूरे पेट की सफाई करता है।

4.कोलेस्ट्रॉल की समस्या में भी लाभदायक है।

5.शरीर की भीतरी शुद्धिकरण के लिए गर्म पानी का प्रयोग एक अच्छा माध्यम है।

पृष्ठ – 26 व 27 पर दी गई सामग्री लेखकों के अपने अनुभव और जानकारी पर आधारित है । कृपया इस सम्बन्ध में योग्य चिकित्सक से उचित परामर्श अवश्य ले लें ।

स्वयं के व्यवहार से ही सम्भव है सामजिक समरसता

किसी भी देश की एकता के लिए सामाजिक समरसता जरूरी है। बरगद की तरह विचार कभी खत्म नहीं होते। सबका शरीर हाड़-मांस से ही बना है। भाव, ज्ञान और कर्म से उसकी पहचान बनती है। इन्ही गुणों की प्रमुखता के नाते हममें से ही कुछ लोग महान बन जाते हैं।

कुलदीप सिंह, मानसा

समरसता समग्र उन्नति की अनिवार्य शर्त है। इसके लिए शिक्षा और प्रेरणा को हथियार बनाएं। ऐसी शिक्षा दें जिससे लोग अच्छा इंसान बन सकें। इसके बाद इन लोगों को समाज को समरस बनाने के लिए प्रेरित करें। आपस में संवाद बढ़ाएं। समाज में एकता की पूर्व शर्त है सामाजिक समता। जब समता आएगी तो सामाजिक एकता अपने आप आएगी। स्वभाव, क्षमता और वैचारिक स्तर पर विविधता का होना स्वाभाविक है। भाषा, खान-पान, देवी-देवता, पंथ-सम्प्रदाय तथा जाति व्यवस्था में भी विविधता है पर यह विविधता कभी हमारी आत्मीयता में बाधा उत्पन्न नहीं करती । विविध प्रकार के लोगों का समूह होने के बावजूद हम सब एक हैं । समान व्यवहार, समता का व्यवहार होने से यह विविधता भी समाज का अलंकार बन जाती है ।

हमारे देश में सभी विविधताओं में से सबसे अधिक चर्चा जातिगत व्यवस्था की होती है । समाज से जाति भेद को दूर करना होगा और इसका उपाय है - सामाजिक समरसता । सामाजिक समरसता के लिए जातिगत व्यवस्थाओं को सही दिशा में काम करना चाहिए। सामाजिक समरसता के लिए भारतीय जीवन मूल्यों को आचरणीय बनाने पर जोर देना है । समरसता की शुरुआत स्वयं से करनी होगी । "हजार भाषणों से अधिक प्रभाव एक कार्यकर्ता के व्यवहार का होता है" इसलिए हमारा मन निर्मल हो, हमारा वचन दंशमुक्त हो, हमारे वचन से किसी को पीड़ा न हो. हम सबका व्यवहार सभी लोगों को अपना मित्र बनाने वाला होगा, तब समाज में समता का भाव विकसित होगा । अपने परिवार में ऐसा वातावरण बनाएं, जिससे सामजिक समरसता को बल मिले । हमारे देश के सभी पंथ-संप्रदायों ने तथा समाज सुधारकों और संतों ने मनुष्यों के बीच भेदभाव का समर्थन नहीं किया है । समानता प्रत्येक पंथ की उत्पत्ति का मूल तत्व रही है लेकिन बाद में समाज को जातियों या संप्रदायों में विभाजित कर दिया गया । भेदभाव लोगों के व्यवहार से भी पैदा होने लगा । हमें भेदभाव समाप्त करने की आवश्यकता पर जोर देना है और उन परंपराओं को खारिज करना है जो अनावश्यक हैं। परम्परा के नाम पर इस भेदभाव को आगे और जारी रहने की अनुमति नहीं दी जा सकती ।उन लोगों की भावनाओं को समझा जाना चाहिए जो हजारों वर्षों से पीड़ित रहे हैं । समाज के कई तबकों ने भेदभाव और अन्याय को लंबे समय तक सहा है । अब हमें भी कुछ वर्षों तक समझना और सहन करना सीखना चाहिए और अपने स्वयं के व्यवहार से वांछित बदलाव लाना चाहिए । रूढ़ी-परम्पराओं को आधुनिक वैज्ञानिक मानकों पर परखा जाना चाहिए और जो परीक्षण में विफल साबित हों, उन्हें खारिज कर दिया जाना चाहिए ।

एक विकसनशील समाज का लक्षण है कि वह निरंतर अपने आप को बदलता रहता है। अपनी परंपराओं की पुन: व्याख्या करता है। नवीन विचारों को अपने पैमानों पर कस कर स्वीकारता है। भारतीय समाज ने निरंतर इस प्रक्रिया को स्वीकार किया है। वह एक ओर अपने परंपरागत मूल्यों को आधुनिक संदर्भों में पुन: व्याख्या करता रहा है तो दूसरी ओर वह आधुनिक विमर्शों को भी स्वीकार करता रहा है।

दुर्भाग्य से ये रूढ़ी-परम्पराएं हजारों वर्षों से नहीं परखी गई और इनका आंख मूंदकर पालन किया जा रहा है । परंपरागत कर्मकांड तो चलते आ रहा है किन्तु जीवन मूल्यों की अनदेखी की गई। अपने व्यवहार में जब तक ये मूल्य प्रकट नहीं होंगे तब तक समता का दर्शन समाज में नहीं हो सकता । हमें अपने जीवन में मूल्यों को मन, मस्तिष्क और व्यवहार में आचरणीय बनाना होगा ।

श्रम का महत्व

अब्राहम लिंकन के पिता जूते बनाते थे। जब वह राष्ट्रपति चुने गये तो अमेरिका के अभिजात्य वर्ग को बड़ी ठेस पहुँची । सीनेट के समक्ष जब वह अपना पहला भाषण देने खड़े हुए तो एक सीनेटर ने ऊँची आवाज में कहा - मिस्टर लिंकन याद रखो कि तुम्हारे पिता मेरे और मेरे परिवार के जूते बनाया करते थे। इसी के साथ सीनेट भद्दे अट्टहास से गूँज उठी । लेकिन लिंकन किसी और ही मिट्टी के बने हुए थे । उन्होंने कहा - मुझे मालूम है कि मेरे पिता जूते बनाते थे । सिर्फ आप के ही नहीं यहाँ बैठे कई माननीयों के जूते उन्होंने बनाये होंगे। वह पूरे मनोयोग से जूते बनाते थे, उनके बनाये जूतों में उनकी आत्मा बसती है, अपने काम के प्रति पूर्ण समर्पण के कारण उनके बनाये जूतों में कभी कोई शिकायत नहीं आयी। क्या आपको उनके काम से कोई शिकायत है? उनका पुत्र होने के नाते मैं स्वयं भी जूते बना लेता हूँ और यदि आपको कोई शिकायत है तो मैं उनके बनाये जूतों की मरम्मत कर देता हूँ । मुझे अपने पिता और उनके काम पर गर्व है ।

सीनेट में उनके ये तर्कवादी भाषण से सन्नाटा छा गया और इस भाषण को अमेरिकी सीनेट के इतिहास में बहुत बेहतरीन भाषण माना गया है। और उसी भाषण से एक थ्योरी निकली 'Dignity of Labour' (श्रम का महत्व) और इसका ये असर हुआ की जितने भी कामगार थे उन्होंने अपने पेशे को अपना सरनेम बना दिया जैसे कि - कोब्लर, शूमेंकर, बुचर, टेलर, स्मिथ, कारपेंटर, पॉटर आदि। अमरिका में आज भी श्रम को महत्व दिया जाता है ।

मकर संक्रान्ति हिन्दुओं का प्रमुख पर्व है।उमंग और उल्लास का प्रतीक मकर संक्रांति एक ऐसा पर्व है जो केवल भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के अन्य देशों में भी मनाया जाता है। हमारे देश में भी ऐसे कई राज्य हैं जहां मकर संक्रांति को विभिन्न नामों से जाना जाता है। उत्तर भारत में यह मकर संक्रांति, माघी कहलाती है । तमिलनाडु में इसे पोंगल, पंजाब में लोहड़ी, कश्मीर घाटी में शिशुर संक्रान्त,पश्चिम बंगाल में पौष संक्रान्ति, कर्नाटक में मकर संक्रमण और असम में बिहू कहते हैं।

इस पर्व का नाम मकर संक्रांति सूर्य के राशि परिवर्तन करने के कारण पड़ा है। सूर्य की एक राशि से दूसरी राशि में जाने की प्रक्रिया को ही संक्रांति कहते हैं। सूर्य के धनु से मकर राशि में प्रवेश करने के कारण इसे 'मकर संक्रांति' कहा जाता है। एक वर्ष में कुल 12 संक्रांतियां आती हैं । इनमें से मकर संक्रांति का महत्व सर्वाधिक है । इसी के बाद से सभी पर्व आरम्भ होते हैं। इस पर्व के वैज्ञानिक पक्षों की बात करें तो ये सर्दी के मौसम के जाने का सूचक है। इसके बाद से मौसम में गर्माहट आने लगती है। इस दिन सूर्य उत्तर की ओर बढ़ने लगता है जो ठंड के घटने का प्रतीक है। बसंत का आगमन भी इसी दिन से माना जाता है।

सर्दी के मौसम के समापन और फसलों की कटाई की शुरुआत का प्रतीक समझे जाने वाले मकर संक्रांति पर्व के अवसर पर लाखों लोग देश भर में पवित्र नदियों में स्नान कर पूजा अर्चना करते हैं। देश के विभिन्न भागों में तो लोग इस दिन कड़ाके की ठंड के बावजूद रात के अंधेरे में ही नदियों में स्नान शुरू कर देते हैं। इलाहाबाद के त्रिवेणी संगम, वाराणसी में गंगाघाट, हरियाणा में कुरुक्षेत्र, राजस्थान में पुष्कर और महाराष्ट्र के नासिक में गोदावरी नदी में श्रद्धालु इस अवसर पर लाखों की संख्या में एकत्रित होते हैं। मान्यता है कि महाभारत काल में भीष्म पितामह ने अपनी देह त्यागने के लिए मकर संक्रांति का ही चयन किया था। मकर संक्रांति के दिन ही गंगा जी भागीरथ के पीछे -पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा मिली थीं ।

यह त्योहार बच्चे बहुत पसंद करते हैं क्योंकि इस अवसर पर बच्चे ही नहीं बड़ों को भी पतंग उड़ाना खूब भाता है। कुछ स्थानों पर तो लोग सामूहिक रूप से किसी बड़े मैदान में एकत्रित होकर पतंगें उड़ाते हैं । तरह-तरह के आकार और रंगों वाली ढेरों पतंगें जब आसमान में झूमने लगती हैं तो सच में उसे देखकर बड़ा मजा आता है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस पर्व पर कुछ अन्य देशों में भी पतंगें उड़ाई जाती हैं।

थाईलैंड:- थाईलैंड में इसे 'सॉन्कर्ण' कहते हैं। पहले थाइलैंड में हर राजा की अपनी विशेष तरह की पतंग होती थी जिसे सर्दियों के मौसम में भिक्षु और पुरोहित देश में शांति की कामना के साथ उड़ाते थे।

नेपाल:-अपने पड़ोसी देश नेपाल के सभी प्रांतों में अलग-अलग नाम और तरह-तरह के रीति-रिवाजों से यह त्योहार उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन वहां के किसान अपनी अच्छी फसल के लिए भगवान को धन्यवाद देकर सदा कृपा बनाए रखने की प्रार्थना करते हैं। मकर संक्रांति को इसी कारण यहां फसलों और किसानों के पर्व के रूप में भी जाना जाता है। इस अवसर पर तीर्थ स्थलों और नदियों के संगम में स्नान करते हैं और तिल, घी, शर्करा और कंदमूल खाते हैं।

कंबोडिया- कंबोडिया के लोग मकर संक्रांति को 'मोहा संगक्रान' के नाम से मनाते हैं । कंबोडिया में नए साल के आगमन और पूरे वर्ष खुशहाली बने रहने के लिए मकर संक्रांति मनाते हैं।

श्रीलंका- श्रीलंका में मकर संक्रांति मनाने का ढंग 'पोंगल' से मिलता-जुलता है। यहां इस पर्व को 'उजाहवर थिरुनल' के नाम से मनाया जाता है। लोग वहां इसे 'पोंगल' भी कहते हैं क्योंकि श्रीलंका में भारतीय तमिल समुदाय के लोगों की अच्छी-खासी संख्या है ।

म्यांमार- म्यांमार की बात करें तो यहां मकर संक्रांति का एक अलग ही रूप देखने को मिलता है। इसे 'थिनज्ञान' के नाम से मनाया जाता है जो बौद्धों से जुड़ा हुआ है। यह त्योहर लगभग 3-4 दिन तक चलता है। नए साल की खुशी में भी यह पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

लाओस- इसी प्रकार लाओस में भी मकर संक्रान्ति पर्व मनाते हैं । वहां इसे पिमालाओ कहते हैं ।

नाभा की भूषण दीदी जी की विदाई समारोह

30 नवंबर को दयानंद पब्लिक स्कूल, पांडूसर मोहल्ला, नाभा की पंजाबी विषय आचार्या दीदी भूषण का विदाई समारोह किया गया। दीदी भूषण ने 1 अप्रैल 1992 को अपनी सेवाएं इस विद्या मंदिर में शुरू की थी। लगभग 30 वर्ष के लंबे अध्यापन के कार्यकाल के बाद आज उन्हें समूह विद्यालय परिवार ने विदाई दी। दीदी भूषण ने इस अवसर पर अपनी बात रखते हुए विद्या मंदिर में बिताए अपने कार्यकाल के दिनों को याद किया एवं विश्वास दिलाया कि विद्या मंदिर जब कभी भी उन्हें कोई जिम्मेवारी देगा तो वह हर्ष से पूरा करेंगी व सदैव विद्यालय के लिए खड़ी रहेंगी।

पिछले अंक से आगे-

उन्होंने रावण को सोते हुए देखा।
सीता जी यहाँ नहीं हैं।
थोड़ी ही दूर पर हनुमान जी ने एक महल देखा।
यह भवन कुछ अलग दिखाई दे रहा है।
भवन के अंदर एक मंदिर और तुलसी का पौधा था।
दीवारों पर राम जी के चित्र थे।
यह कैसे संभव है ? लंका में तो राक्षस रहते हैं। यहाँ कोई धर्मात्मा कैसे रह सकता है ?
श्री राम
श्री राम
हनुमान जी जब इस विषय पर विचार कर रहे थे तभी घर का मालिक जाग गया। रावण के छोटे भाई विभीषण के शब्द सुनकर हनुमान जी चकित व प्रसन्न हुए।
वास्तव में वह एक श्रेष्ठ व्यक्ति है। मैं उससे मित्रता कर सकता हूँ।
राम, राम, राम
हनुमान जी ने एक ब्राहमण का रूप धारण किया और विभीषण को पुकारा।
राम ! राम ! कोई है घर में ?
स्वागत है, निश्चित रूप से आप मेरी तरह कोई हरि भक्त हैं।
हनुमान जी ने उसे अपना परिचय देकर राम जी की कहानी सुनाई और लंका में आने का कारण बताया। विभीषण राम के विषय में जानकर रोमांचित हो उठे।
ओह ! मैं लंका में एक राम भक्त को देखकर आश्चर्यचकित हूँ
मैं तो यहां वैसे ही रहता हूँ जैसे दांतों के बीच में जीभ रहती है।

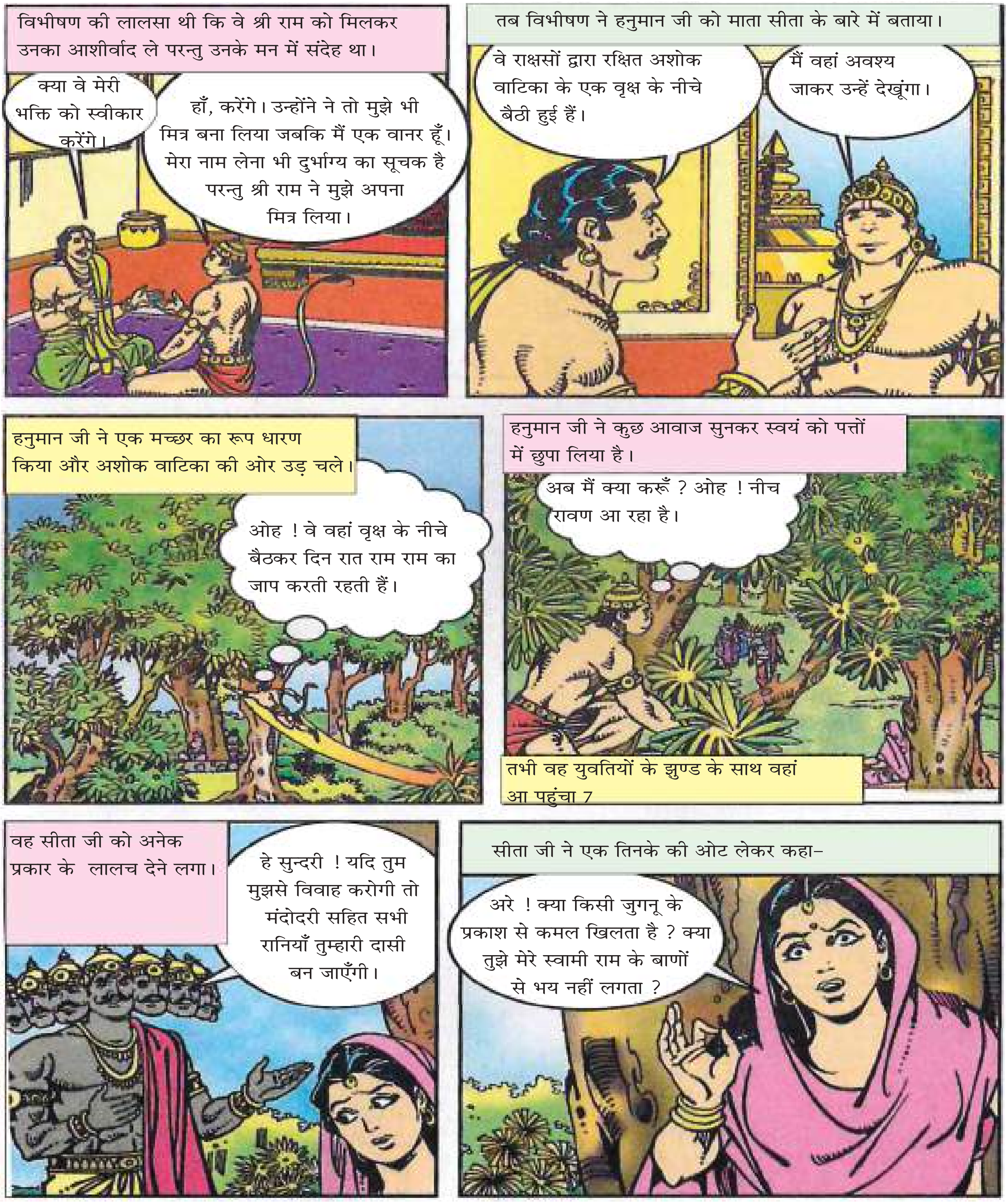
विभीषण की लालसा थी कि वे श्री राम को मिलकर उनका आशीर्वाद ले परन्तु उनके मन में संदेह था।
क्या वे मेरी भक्ति को स्वीकार करेंगे।
हाँ, करेंगे। उन्होंने ने तो मुझे भी मित्र बना लिया जबकि मैं एक वानर हूँ। मेरा नाम लेना भी दुर्भाग्य का सूचक है परन्तु श्री राम ने मुझे अपना मित्र लिया।
तब विभीषण ने हनुमान जी को माता सीता के बारे में बताया।
वे राक्षसों द्वारा रक्षित अशोक वाटिका के एक वृक्ष के नीचे बैठी हुई हैं।
मैं वहां अवश्य जाकर उन्हें देखूंगा।
हनुमान जी ने एक मच्छर का रूप धारण किया और अशोक वाटिका की ओर उड़ चले।
ओह ! वे वहां वृक्ष के नीचे बैठकर दिन रात राम राम का जाप करती रहती हैं।
हनुमान जी ने कुछ आवाज सुनकर स्वयं को पत्तों में छुपा लिया है।
अब मैं क्या करूँ ? ओह ! नीच रावण आ रहा है।
तभी वह युवतियों के झुण्ड के साथ वहां आ पहुंचा 7
वह सीता जी को अनेक प्रकार के लालच देने लगा।
हे सुन्दरी ! यदि तुम मुझसे विवाह करोगी तो मंदोदरी सहित सभी रानियाँ तुम्हारी दासी बन जाएँगी।
सीता जी ने एक तिनके की ओट लेकर कहा–
अरे ! क्या किसी जुगनू के प्रकाश से कमल खिलता है ? क्या तुझे मेरे स्वामी राम के बाणों से भय नहीं लगता ?

1.पप्पू – 'भाई जो डर गया, वो तो मर गया' ये कहावत कैसे बनी होगी? गप्पू – मुझे नहीं पता। तू ही बता। पप्पू – बात ऐसी है कि जापान में दो भाई रहा करते थे, उनमे से एक का नाम 'जो' था और दूसरे का नाम था 'वो'। एक रात जो को बाथरूम में भूत दिख जाता है। जो डर गया और वह वो को आवाज लगाता है। वो भी दौड़ते हुए बाथरूम आता है । भूत देखते ही वो का हार्ट फेल हो गया और वो मर गया। बस तभी से ऐसी कहावत बन गई कि 'जो डर गया, वो मर गया'।

2.पापा – बेटा तुम्हारे रिजल्ट आया नहीं क्या ? पप्पू – हाँ, पापा मेरे 80 प्रतिशत आए हैं। पापा – पर मार्कशीट में तो 40 प्रतिशत लिखा है? पप्पू – बाकी के 40 प्रतिशत पापा आधार कार्ड लिंक होने पर सीधे अकाऊंट में आ जाएंगे ।

3.कैप्टन – नौ जवानों आगे बढ़ो । कैप्टन का आदेश सुन कर सभी जवान आगे बढ़ गए, पर एक पप्पू वहीं पर खड़ा रह गया । कैप्टन – अरे पप्पू तुम क्यों नहीं आगे बढ़े? पप्पू – सर, आप ने तो कहा था कि नौ जवानों आगे बढ़ो और मैं तो दसवां जवान हूं, कैसे आगे बढ़ूँ ?

4.अकबर– बीरबल तुम मुझे एक बात बताओ, मैं अपने सभी काम करने वालों मे से ज्यादा मेहनत करने वाले इंसान की पहचान कैसे करूँ ? बीरबल– महाराज मैं अभी सबको बुलाकर लाता हूँ, फिर आपको बताता हूँ । बीरबल उसी समय सब काम करने वालों को बुला लाता है व उनमे से एक व्यक्ति का हाथ पकड़ कहता है – महाराज ये है वो इंसान । अकबर– अच्छा तो तुमने इस महान व्यक्ति की पहचान कैसे की ? बीरबल– महाराज, इसका मोबाईल मैंने अभी ही चेक किया है, इसकी मोबाइल बैटरी 98 प्रतिशत है ।

5.पिता – मैंने तुमको फूल तोड़कर लाने को कहा था लेकिन तुम पूरी डाली ही क्यों तोड़ लाए ? पप्पू – क्योंकि वहां लिखा था 'फूल तोड़ना मन है'। अत: मैं पूरी डाली ही तोड़ लाया ।

वैकल्पिक व्यवस्था

6.पति–पत्नी दोनों सरकारी अधिकारी थे । पत्नी एक रैंक छोटी अधिकारी थी । एक बार उनमें ऐसी खटपट हो गई कि बोलचाल भी बन्द । घर में तीसरा कोई और नहीं था । इसलिए बड़ी समस्या हो गई। खैर,चूँकि दोनों सरकारी सेवक थे सो इस अबोले का भी हल निकाल लिया । नोट शीट के माध्यम से लिखा–पढ़ी करके बातचीत होने लगी । एक शाम जब पति महोदय घर आये तो पत्नी ने नोट शीट पेश कर दी – थके हुए लगते हैं, क्या चाय लेना पसंद करेंगे ? पति ने लिखा – यथा प्रस्तावित । पत्नी ने आगे भी लिखा – आदेश हो तो साथ में बिस्किट भी संलग्न कर दूँ ? पति ने लिखा – अनुमोदित, किन्तु मात्र 2 ही स्वीकृत । इसी तरह नोट शीट पर लिख–लिख कर चाय – पानी, खाना पीना वगैरह चलने लगा परंतु बातचीत अभी भी बन्द ही थी । अचानक एक दिन पत्नी ने नोट शीट प्रस्तुत की– मेरे मायके से संदेश आया है कि मेरी माता जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है,चार दिनों के लिए मायके जाना चाहती हूँ, कृपया अवकाश स्वीकृत कर रिलीव करें। पति ने लिखा– स्वीकृत, पर 'वैकल्पिक व्यवस्था' सुनिश्चित करने के बाद ही अवकाश पर प्रस्थान करें। इतना पढ़ते ही पत्नी ने पति की अच्छी सेवा कर दी । बेचारा पति अभी मेडिकल लीव पर है ।

7. पति ने पत्नी से कहा– एक गिलास पानी देना। पत्नी ने कहा – आज मैं मटर पनीर की सब्जी बनाने जा रही हूं। पति बोला – वाह वाह। इस पर पत्नी ने कहा – आ गया पानी आपके मुँह में। पति ने कहा – हाँ । पत्नी बोली – इसे पी लो और चुपचाप बैठ जाओ।

8. टिंकू मूंगफली खा रहा था। मिंकू ने पूछा – अकेले अकेले। टिंकू बोला – 10 रूपए की मूँगफली अकेले ही खाऊंगा और क्या 10 रूपए में लंगर लगाऊँगा।

सामाजिक समरसता

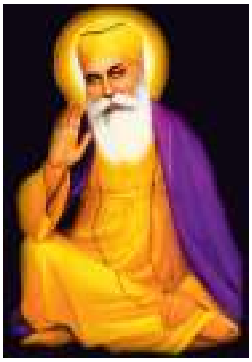

हमें भूलना नहीं चाहिए कि शस्यश्यामला हमारी मातृभूमि धनधान्य से परिपूर्ण थी । यहाँ मां लक्ष्मी, सरस्वती व शक्ति की देवी दुर्गा की अपार कृपा थी । इस देश का ज्ञान भण्डार, इस देश की भौतिक और आर्थिक समपन्नता, इस देश की खनिज सम्पदा विश्व के लालची व स्वार्थी तत्वों की दृष्टि में खटकने लगी । हमारी आर्थिक सम्पन्नता ही विश्व के लिए ईर्ष्या का कारण बनी । परिणाम स्वरुप पहले यवन, फिर मुगलों ने और अंत में अंग्रेजों ने हमें परतंत्र करने में सफलता पाई । इसका मूल कारण हमारे समाज में कालान्तर में उत्पन्न हुआ संगठन शक्ति का अभाव तथा सामाजिक समरसता में आई दुर्बलता थी।

हमें आज भी इस तथ्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि देश जन्माधारित वर्ण व्यवस्था का प्रतिकूल परिणाम भुगत रहा है । कर्म कौशल प्रदान करने वाली व्यवस्था को जब जन्माधारित बना देने का पाप हमने किया तो परिणाम स्वरुप समाज का एक वर्ग दूसरे से घृणा करने लगा । एक वर्ग ज्ञान का ठेकेदार बन गया जबकि दूसरे वर्ग ने लक्ष्मी पर एकाधिकार बना लिया । फलत: विषमता कहीं जातिगत और कहीं अर्थगत बन गई। सरदार, जागीरदार, व्यापारी, उद्योगपति अभिजात्य वर्ग बन गया और खेतों में अपना खून पसीना बहाने वाला, मिट्टी के साथ मिट्टी होकर जमींदार, साहूकार के भंडारों को धन धान्य से भरने वाला मजदूर भूखे पेट सोने को मजबूर, विश्व प्रसिद्ध ढाका की मलमल बनाने वाला कारीगर स्वयं वस्त्रहीन, महल बनाने में जिन मजदूरों ने काम किया उनको प्रकृति के क्रूर थपेड़ों से बचने के लिए घास फूस की झोपड़ी देने की व्यवस्था भी यदि समाज उपलब्ध न करवा सके तो विषमता आना तो स्वाभाविक ही था । छुआछूत, अंधविश्वास एवं रूढ़िजनित कर्मकांड के तथा धर्म की भ्रमित व्याखाएं बढ़ने के फलस्वरूप परस्पर ऊंच नीच का भाव बढ़ा ।

समाज रूपी श्रृंखला की शक्ति कुछ मोटी सुदृढ़ कड़ियों में नहीं बल्कि श्रृंखला की निर्बल कड़ियों में होती है । इसलिए सम्पूर्ण श्रृंखला मजबूत और सुदृढ़ चाहिए। समाज के प्रत्येक वर्ग का स्वस्थ होना आवश्यक है । अन्यथा समाजरूपी यह जंजीर कमजोर, घिसी हुई कड़ियों से टूट जाएगी । मजबूत कड़ियाँ भी उस टूटने से होने वाली हानियों से बच नहीं पाएंगी । भूतकाल में यही हमारे देश और समाज के साथ हुआ और वर्तमान में भी हो रहा है । 'आत्मवत् सर्वभूतेषु, अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्' भारतीय संस्कृति के ये मूल मन्त्र जब हमारी सामाजिक व्यवस्था से लुप्त हो गए तो धर्मांतरण की गतिविधियाँ बढीं, परकीय शक्तियां हमारे देश को पराधीन करने में सफल हो गईं । हमें यह स्वीकार करना ही होगा कि हिन्दू समाज का यह दोष रहा है कि जंगलों, पर्वतों, वनों में रहने वाले अपने ही बन्धु बांधवों को अपने साथ समरस करने में असमर्थ रहा है । शासन के कुचक्रों के कारण कुरीतियों के शिकार हुए अपने ही स्वजनों को हम आत्मसात नहीं कर सके जिसका लाभ राष्ट्र व समाज विरोधी तत्व सदा ही उठाते रहे हैं । हमारी इसी विषमता व उपेक्षा के कारण ही देश को परतंत्रता का दुर्भाग्य झेलना पड़ा ।

मुगलों के विरोध में हिन्दू समाज को संगठित करने का कार्य महराणा प्रताप व छत्रपति शिवाजी जैसे वीरों ने किया । समाज के मानस को संवेदनशील बनाने का काम हमारे संतों ने किया । महाराष्ट्र में संत ज्ञानदेव, तुकाराम, नामदेव, चोखा मेला, नरहरी सोनार, एकनाथ जी आदि संतों ने सामाजिक एकता निर्माण करने का कार्य किया । महान संत, समाज सुधारक, महान दार्शनिक श्री गुरु नानक देव जी ने तो सम्पूर्ण देश में अपनी उदासियों के माध्यम से समाज को जोड़ने व जाति पांति पर कठोर कुठाराघात करने का कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किया । न केवल मात्र इतना ही उन्होंने अंधश्रद्धा को मिटाने और सामाजिक समरसता के निर्माण हेतु अनथक प्रयास किया ।

जाति प्रथा नष्ट करने की उक्ति और कृति में अपने देश में जितना अंतर पाया जाता है उतना पूरे विश्व में कहीं भी दिखाई नहीं देता है । जातीयता के कारण मनुष्य की दृष्टि साफ नहीं रहती है । तथाकथित वरिष्ठ जाति के गुनाह माफ हो जाते हैं और उनके द्वारा किया हुआ अन्याय चुपचाप सहन किए जाते हैं । किसी व्यक्ति में हीनता निर्माण करने वाली और दूसरे में अहंकार जगाने वाली जातिप्रथा यदि नष्ट की जाती है तो ही एकरस समाज का निर्माण हो सकता है । इस सम्बन्ध में बातें तो सभी करते हैं परन्तु समाज के ही कुछ लोग अपना राजनैतिक, आर्थिक व धार्मिक वर्चस्व बनाए रखना चाहते हैं । इसी कारण समाज का एक वर्ग दूसरे की उपेक्षा और तिरस्कार करता है और दूसरा वर्ग पहले वर्ग से द्वेष करता है । यह सम्पूर्ण समाज के लिए घातक स्थिति है और विघटन का कारण भी है । भेदभाव और विषमता पर आधारित जाति व्यवस्था नष्ट होनी चाहिए ।कोई भी जाति ऊंची व नीची नहीं है । सभी जातियों के लोग सामान हैं ।सभी के साथ समानता का व्यवहार होना चाहिए ।

देश में सुख समृद्धि बनी रहे, समाज का प्रत्येक घटक सद्भाव से रहे, नगरवासी, ग्रामवासी, वनवासी, गिरिवासी सभी भारत माता के पुत्र समरस भाव से रहें, समाज जीवन में नैतिक मूल्य प्रभावी हों, सामान्य जन सुखी और सुरक्षित अनुभव करे, व्यक्ति व्यक्ति का शोषण न करे, न्याय पाना सबके लिए सुलभ हो, दंडाधिकारी न्याय धर्म का पालन करें, शासन भ्रष्टाचार मुक्त हो, कृषक, व्यापारी, शिक्षक, उद्योगपति सब अपना-अपना कार्य कर्तव्य भावना से करने वाले हों, सबल दुर्बल का शोषण न करे, जाति-पाति, पंथों व सम्प्रदायों में परस्पर सौहार्द हो, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्र सतत विकासोन्मुख हो, विश्व में देश का सम्मान हो । कोई भी सत्ता लोलुप या आतंकी समूह, कोई भी धर्मांध, कोई भी तानाशाह हमारी मातृभूमि पर आक्रमण करने का सहास न कर सके, इस हेतु परम आवश्यक है कि अपना समाज एकजुट, संगठित और कर्तव्यनिष्ठ हो ।

लेखक - श्री बोधराज जी

श्री गुरु तेग बहादुर जी को अर्पित किए श्रद्धा सुमन

सिखों के नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी के शहीदी दिवस पर शारदा सर्वहितकारी विद्या मंदिर, सेक्टर 40 डी, चंडीगढ़ के विद्यार्थियों ने चार्ट व पोस्टर बनाकर श्री गुरु जी को श्रद्धांजलि दी और उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए । डायरेक्टर श्री बी. एस. कँवर जी और प्रधानाचार्या अर्चना नागरथ जी ने विद्यार्थियों की हौसला अफजाई करते हुए गुरु तेग बहादुर जी को याद किया।

'सर्वहितकारी सुपर 100' अभिभावकों की बैठकें

40 डी(चंडीगढ़), श्री सुरेन्द्र कुमार विद्या मंदिर (श्री मुक्तसर साहिब), छोकरां व सरहिंद सर्वहितकारी विद्या मंदिरों में 'सर्वहितकारी सुपर 100' के अन्तर्गत प्रधानाचार्यों, अभिभावकों व छात्रों की बैठकें सम्पन्न हुई । इन बैठकों में बताया कि किस प्रकार यह उनके लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा । प्राप्त समाचारों के अनुसार सभी छात्र खुश हैं और इन क्लासों में वह अपनी उपस्थिति नियमित करा रहे हैं । उनके अभिभावकों से भी समय समय पर संपर्क बना रहता है । उन्हें अपने बच्चों की पूरी जानकारी होती है जिससे वे पूर्णत: संतुष्ट हैं।

राजस्थान से आए संतों का किया गया स्वागत

जालंधर, दीनानगर व बरनाला में सांझीवाल कार्यक्रम में राजस्थान से आए संतों का स्वागत किया गया । इस अवसर पर इन सभी विद्या मंदिरों के आचार्य दीदी व छात्र उपस्थित रहे । इस कार्यक्रम में संतों द्वारा भगवान श्री कृष्ण जी की प्रतिमा जो कि संत गुरु रविदास जी ने उपहार स्वरूप मीराबाई को दी थी, मीराबाई जी का सितार व चरण पादुका आकर्षण का केंद्र रही ।ये सभी पवित्र वस्तुएं संत राजस्थान से साथ लाए थे । इस अवसर पर आए हुए संतों ने जात-पात ऊंच-नीच भेदभाव से अलग होकर एकजुट होने के लिए प्रेरित किया ।

हमें अपने कर्तव्यों की भी जानकारी हो।

'हमारे द्वारा अपने अधिकारों की मांग किया जाना तभी सार्थक होगा जब कि हमें अपने अधिकारों से पहले कर्तव्यों की जानकारी हो'। ये शब्द प्रेमधाम सर्वहितकारी विद्या मंदिर, पटियाला के प्रधानाचार्य प्रदीप विश्नोई ने 'संविधान दिवस' के अवसर पर कहे । प्राप्त समाचारों के अनुसार चंडीगढ़ 40 डी, चंडीगढ़ 43 बी, घरोटा, दीनानगर, पटियाला, मोहाली आदि विद्या मंदिरों में 'भारतीय संविधान दिवस' के शुभ अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । श्री कुलवंत राय सर्वहितकारी विद्या मंदिर 43 बी, चंडीगढ़ के आचार्यों व छात्रों ने ऑनलाइन माध्यम से संविधान की प्रस्तावना पढ़ने से संबंधित कार्यक्रम में भाग लेकर प्रमाण पत्र प्राप्त किए गए। साथ ही छात्रों द्वारा ऑनलाइन प्रश्न मंच में भाग लेकर भी प्रमाण पत्र प्राप्त किए गए।

मलोट व रामदरबार में योग कार्यशाला का आयोजन

सेठ इंद्रभान तनेजा सर्वहितकारी विद्या मंदिर, मलोट व श्री हजारीलाल सर्वहितकारी विद्या मंदिर रामदरबार, चंडीगढ़ में संस्कृति महोत्सव के कार्यक्रम में योग कार्यशाला कराई गई । जिसमें बच्चों ने बड़े उत्साह से भाग लिया और अन्य प्रकार की गतिविधियां की, जैसे कि संस्कृत श्लोक, योग आदि । उल्लेखनीय है ये संस्कृति कार्यशालाएं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित की गईं है ।

विभाग स्तरीय वर्ग में शिशु वाटिका को मजबूत करने का लिया संकल्प

योगीराज भगवान नारायण सर्वहितकारी विद्या मंदिर, दीनानगर में 1 दिसंबर को शिशु वाटिका आचार्य दीदी वर्ग संपन्न हुआ। इस वर्ग में शिशु वाटिका प्रान्त प्रमुख दीदी कुसुम जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कुसुम दीदी जी ने शिशु वाटिका की व्यवस्थाओं को और मजबूत करने आह्वान किया । दीदियों ने शिशु वाटिका में आने वाली समस्याओं और उसके समाधान की भी चर्चा की ।

सुनाम के छात्र गुरप्रीत को किया गया सम्मानित

श्री सूरजकुंड सर्वहितकारी विद्या मन्दिर, सुनाम के नौवीं के छात्र गुरप्रीत सुपुत्र बीरबल शर्मा ने 23 वीं जिला स्तरीय रोलर स्केटिंग चैम्पियनशिप में 500 व 1000 मीटर रोलर स्केटिंग दौड़ में स्वर्ण पदक, 11 से 14 नवम्बर को मोहाली में संपन्न हुई 55 वीं प्रांत स्तरीय पंजाब रोलर स्केटिंग चैंपियनशिप में जिला संगरूर का प्रतिनिधित्व करते हुए 500 मीटर रोलर स्केटिंग दौड़ में रजत पदक तथा 1000 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त करके जिला संगरूर, अपने माता -पिता व विद्या मन्दिर का नाम पूरे पंजाब में आलोकित किया । प्रधानाचार्य राजेश कुमार ने गुरप्रीत शर्मा को पदक व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया ।

मासिक दक्षता वर्ग हुए सम्पन्न

बेगोवाल तारागढ़, साधु आश्रम संगरूर व दीनानगर में मासिक दक्षता वर्ग की कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसमें चार सत्रों में सारा कार्यक्रम संपन्न हुआ ।इन दक्षता वर्गों की सम्पूर्ण योजना आचार्य दीदियों द्वारा ही बनाई गई । इतना ही नहीं वर्ग से समबन्धित सभी कार्य भी आचार्य दीदियों ने ही किए ।

जैतो में दिखाई गई विज्ञान प्रदर्शनी

सर्वहितकारी सीनियर सेकेंडरी विद्या मंदिर, जैतो में 27 नवम्बर को विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया ।इस प्रदर्शनी में छात्रों ने अलग - अलग प्रकार के मॉडल बनाये। छात्रों के बनाये मॉडलों की अभिभावकों ने खूब प्रशंसा की। इस प्रदर्शनी के जज श्रीमान गुरदर्शन जैन जी, श्री चंदरमोहन जी, श्री लविश सिंगला जी रहे। इस प्रदर्शनी में स्थान प्राप्त छात्रों को सम्मानित भी किया गया ।

मासिक प्रधानाचार्य बैठक

भोआ व मोगा संकुलों की मासिक प्रधानाचार्य बैठकों में संपन्न हुए पूर्व कार्यक्रमों की समीक्षा के साथ ही आगामी योजनाओं पर भी खुलकर विचार मंथन हुआ ।इन बैठकों में शत प्रतिशत प्रधानाचार्य उपस्थित रहे ।'आजादी के अमृत महोत्सव' व शिक्षा समिति के 'स्वर्ण जयंती' वर्ष की योजनाओं पर विशेष चर्चा हुई ।

रामपुराफूल में पौष्टिक भोजन गतिविधि

22 नवंबर, रामपुरा फूल। लाला कस्तूरी लाल सर्वहितकारी सीनियर सेकेंडरी विद्या मंदिर में प्रधानाचार्य एस. के. मलिक के निर्देशानुसार दीदी ज्योति की देख-रेख में विद्या मंदिर द्वारा 'पौष्टिक भोजन गतिविधि' करवाई गई। इस गतिविधि में कक्षा पहली से छठी तक के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। सभी बच्चे लंच में साग व मक्की की रोटी या फिर शकरकंदी लेकर आए। सभी बच्चों ने इस गतिविधि का बहुत आनंद उठाया।

भीखी में छात्रों को करवाई गई कौशल विकास हेतु गतिविधियां

श्री ताराचंद सर्वहितकारी विद्या मंदिर, भीखी में 1 दिसम्बर को छात्रों के कौशल विकास हेतु अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत कक्षा नौवीं के छात्रों ने घर पर रखे हुए प्रयोग में न आने वाले कपड़ों से रसोई नैपकीन, रुमाल, बैग,मास्क,रबड़ बैंड,टेबल कवर, पेन्सिल, पेन किट आदि बनाना सीखा ।

तपा व छोकरां के छात्रों का टूर रविवार 28 नवंबर को तपा व छोकरां विद्या मंदिरों के छात्रों को ज्ञानवर्धक, मनोरंजक और धार्मिक स्थलों की यात्रा पर ले जाया गया । छात्रों को धार्मिक और ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब के दर्शनों के लिए ले भी जाया गया। छात्रों और अध्यापकों ने बहुत ही श्रद्धापूर्वक वहां पर माथा टेका, गुरु का लंगर छका तथा अपने आचार्यों से गुरुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त किया।

होशियारपुर व चंडीगढ़ संकुल में प्रधानाचार्य बैठकें

होशियारपुर विद्या मंदिर में होशियारपुर विभाग की जबकि 40 डी चंडीगढ़ में चंडीगढ़ संकुल की मासिक प्रधानाचार्य बैठकें संपन्न हुई । इन बैठकों में वर्तमान गतिविधियों और आगामी योजनाओं के विषय में चर्चा संपन्न हुई ।

अभिनूर सिंह ने रोबो मेज रेस में प्राप्त किया तीसरा स्थान

डी.ए.वी. पटियाला द्वारा 14 नवम्बर को अंतर स्कूल प्रतियोगिता बोटजोन का आयोजन किया गया जिसमें दयानंद पब्लिक स्कूल, सिल्वर सिटी, नाभा के कक्षा 10 वीं के छात्र सतिंदर सिंह एवं कक्षा 7 वीं के अभिनूर सिंह ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता में छात्रों को अटल टिंकरिंग लैब के अंतर्गत रोबोट बनाने के बारे में सिखाया गया । प्रतियोगिता में बच्चों ने रोबो कार बनाई एवं फिर रेस में हिस्सा लिया जिसमें अभिनूर सिंह ने तीसरा स्थान हासिल किया ।

अबोहर, नाभा व दूलोवाल में वार्षिक खेलकूद का आयोजन

25 नवंबर दयानंद पब्लिक स्कूल पांडूसर नाभा के मोती बाग स्थित स्पोर्ट्स कंपलेक्स में 29 वें वार्षिक खेलकूद समारोह का आयोजन किया गया जबकि श्री रोशनलाल जैन सर्वहितकारी विद्या मंदिर, अबोहर में भी वार्षिक खेलकूद पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सभी विद्यार्थियों ने तरह-तरह की रेस में भाग लिया। दूसरी ओर दूलोवाल विद्या मंदिर में वार्षिक खेलकूद की तैयारियां जोर शोर से जारी हैं ।

श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारने का विजय नड्डा ने दिया संदेश

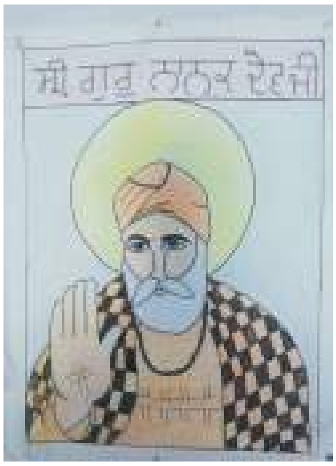

विद्या धाम जालंधर ।'सत गुरु श्री नानक जी ने सम्पूर्ण विश्व को मानवता का संदेश दिया। उन्होंने पाखंडवाद और जाति पांति का खंडन किया ।उस समय अपना देश मुगलों के आतंक से त्रस्त था । ऐसे समय में जब सम्पूर्ण समाज निराशा के घोर अंधकार में डूबा हुआ था तब सत गुरु नानक जी ने अपनी शिक्षाओं से समाज में आशा का संचार किया । उनकी शिक्षाएं आज भी उतनी प्रसांगिक हैं जितनी उस समय थीं । आवश्यकता है उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारने की ।' यह शब्द विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री विजय नड्डा ने धन धन श्री गुरु नानक जी के 552 वें प्रकाश उत्सव पर दिए एक संदेश में व्यक्त किए । श्री गुरु नानकदेव जी का प्रकाश पर्व सभी विद्या मंदिरों में परम्परागत हर्षोल्लास से मनाया गया ।इस शुभ अवसर पर विद्या मंदिरों में श्री सुखमणि साहिब जी के पाठ, लंगर और अन्य अनेक कार्यक्रम व प्रतियोगिताएं करवाई गई । शिशु वाटिकाओं और संस्कार केन्द्रों में भी श्री गुरु जी का जन्म दिहाड़ा पूर्ण श्रद्धा से मनाया गया ।

प्रश्न मंच हुए संपन्न

विभिन्न अवसरों पर 40 डी चंडीगढ़, जैतो व भोआ सर्वहितकारी विद्या मंदिरों में प्रश्न मंच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों ने पूर्ण उत्साह से भाग लिया । स्थान प्राप्त छात्र छात्राओं को प्रधानाचार्यों द्वारा पुरस्कार देकर समानित भी किया गया ।

फगवाड़ा में छात्रों से करवाई गई पंजाबी सभ्याचार की गतिविधियां

बच्चों को पंजाबी सभ्याचार से जोड़े रखने हेतु फगवाड़ा विद्या मन्दिर में विभिन्न गतिविधियाँ करवाई गईं । बच्चे खाने के लिए अपने घरों से आटे की चिड़िया बनाकर लाए और बड़े प्रेम से मिलजुल कर उसे खाया । साथ में लाए हुए गीले आटे से उन्होंने गोलियां बनाकर पक्षियों के लिए रखी ।

नाभा के पूर्व छात्रों ने लिया सम्मेलन में भाग

चंडीगढ़, 14 नवम्बर, सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब द्वारा शारदा सर्वहितकारी 40 डी, चंडीगढ़ में विद्या मंदिर पूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें पंजाब के सभी विद्या मंदिरों के लगभग 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया । दयानन्द पब्लिक स्कूल, पाण्डूसर, नाभा की पूर्व छात्र समिति के 6 सदस्यों - हिमानी वर्मा, चन्द्रिका, गुरप्रीत सिंह , सतनाम सिंह, लोकेश ठाकुर व चेतना जटवानी ने इस सम्मेलन में अपनी प्रतिभागिता दर्ज करवाई ।

नवदीप शेखर जी का जैतो विद्या मंदिर में प्रवास

17 नवंबर को मुक्तसर विभाग पालक व प्रांत के सह शैक्षणिक प्रमुख श्री नवदीप शेखर जी और विभाग सचिव श्री पूर्ण चंद जी का जैतो विद्या मंदिर में प्रवास रहा। उन्होंने प्रबंध समिति बैठक, और विभाग प्रधानाचार्य बैठक में भाग लिया । इस बैठक में मुक्तसर विभाग के 12 प्रधानाचार्य ने भाग लिया। विभाग सचिव श्री पूर्ण चंद जी द्वारा चाइनीज भाषा, पूर्व छात्र परिषद बैठक, सुपर 100 और प्रांत द्वारा अपेक्षित समय-समय पर भेजने वाली सभी जानकारियों से अवगत करवाया ।

नरोट मेहरा विद्या मंदिर में भेंट की 6 कुर्सियां

स्वामी गंगापुरी सर्वहितकारी विद्या मंदिर, नरोट मेहरा को एक सेवाभावी व्यक्ति द्वारा 6 कुर्सियां सप्रेम भेंट स्वरूप दी गई । विद्या मंदिर इंचार्ज व प्रांत बाल संस्कार केंद्र प्रमुख बोधराज ने बताया कि उन्होंने अपना नाम बताने से मना किया है । इनका कहना है कि सेवा ऐसी करनी चाहिए जो एक हाथ से दी जाए दूसरे को पता ना चले। इन सेवा भावी सज्जन को साधुवाद।

अमृतसर व जगरांव में मनाया लाला जी का शहीदी दिवस

माधव विद्या निकेतन,अमृतसर और श्रीमती सतीश गुप्ता सर्वहितकारी विद्या मंदिर, जगरांव में शेरे ए पंजाब लाला लाजपत राय का शहीदी दिवस मनाया गया। इन दोनों ही स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में छात्रों को लाला जी की शहादत से प्रेरणा लेने की बात कही गई ।

मोहाली के छात्रों ने दो स्वर्ण व 4 कांस्य पर किया कब्जा

मोहाली फेज 8 में खेल विभाग पंजाब सरकार द्वारा 13,14 नवंबर को दो दिवसीय एथलीट खेल मेला आयोजित किया गया जिसमें मोहाली जिले के कई विद्यालयों ने भाग लिया। इसमें जितेंद्रवीर सर्वहितकारी

मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सेक्टर 71, मोहाली के छात्रों ने अपना शानदार प्रदर्शन करते हुए दो स्वर्ण तथा 4 कांस्य पदकों पर कब्जा कर विद्यालय का नाम रोशन किया। विद्या मन्दिर की प्रधानाचार्या दीदी श्रीमती कविता अत्री जी ने जानकारी देते हुए बताया कि हमारे विद्या मन्दिर में खेलकूद के लिए विशेष व्यवस्थाएं की जाती हैं ताकि छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके।

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा जारी किया गया न्यूज बुलेटिन

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा वैदिक गणित के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में न्यूज बुलेटिन जारी किया गया । इस न्यूज बुलेटिन में पांच प्रांतों पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली व जम्मू में करवाई गई वैदिक गणित की गतिविधियों का उल्लेख किया गया है । उत्तर क्षेत्र के वैदिक गणित प्रमुख श्री गोपाल दास शर्मा जी के मार्गदर्शन में यह न्यूज बुलेटिन जारी किया गया । इसका मुख्य उद्देश्य प्रांतों में हो रही गतिविधियों के बारे में सभी को जागरूक करना है जिससे वैदिक गणित का प्रचार-प्रसार हो सके और विभिन्न विद्यालयों में भी वैदिक गणित के महत्व को बताया जा सके। इसका संचालन श्रीमती ज्योति तिवारी जी द्वारा किया गया जो वैदिक गणित पंजाब प्रांत की सह प्रमुख हैं और शारदा सर्वहितकारी स्कूल चंडीगढ़ में वैदिक गणित प्रमुख हैं।

मालेरकोटला के समारोह में बड़ी संख्या में आए अभिभावक

सर्वहितकारी विद्या मंदिर, मालेरकोटला में नर्सरी से 5 वीं कक्षा तक के लिए 28 नवम्बर को वार्षिक समारोह का आयोजन किया। इस वार्षिक समारोह में बहुत अच्छी संख्या में माता-पिता शामिल हुए जो कि एक बड़ी सफलता है । श्री कमल कांत ऐरी जी मुख्य अतिथि थे। जबकि डा. संजीव गोयल एम.डी. (चाइल्ड स्पेशलिस्ट) ने अध्यक्षता की । श्री ऐरी जी ने भाषण में माता-पिता को एक जोरदार संदेश देते हुए कहा कि उन्हें अपने बच्चों से अपेक्षा करने से पहले स्वयं को बदलना होगा । उन्होंने लीक से हटकर सोचने की आवश्यकता पर भी जोर दिया क्योंकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं है बल्कि व्यक्ति की सोच का विकास करना भी है। छात्रों ने एक के बाद एक मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत कर, सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया जिसकी अभिभावकों ने खूब सराहना की।

सुनाम को एन.सी.सी. शुरू करने का मिला स्वीकृति पत्र

बहुत ही हर्ष का विषय है कि श्री सूरजकुंड सर्वहितकारी विद्या मंदिर, सुनाम में एन.सी.सी. शुरू करने के लिए स्वीकृति पत्र मिला । यह एक ऐतिहासिक दिन है जब हमें एन.सी .सी. विंग(50JD/JW) का यूनिट स्थापित करने का अनुमति पत्र प्राप्त हुआ । इस कार्य के लिए हम 3, पंजाब एयर स्काव्डर्न एन.सी.सी. यूनिट कार्यालय, पटियाला के आभारी हैं । स्कूल प्रशासन व स्कूल प्रबंध समिति के अथक प्रयासों से यह संभव हो पाया है ।

बरनाला में बताया गया ई.वी.एम.का सही प्रयोग करना

2 दिसंबर को सर्वहितकारी विद्या मंदिर, बरनाला में चुनाव आयोग ने आचार्यों, छात्रों व लोगों को ई.वी.एम. व वी.वी.पैट. के प्रयोग के बारे में जागरूक किया गया । सुपरवाइजर सुरेंद्र कुमार और बी.एल.ओ. अपनी टीम के साथ मौजूद रहे। उन्होंने सभी को समझाया कि अब ई.वी.एम. मशीन के साथ वी.वी.पैट. का प्रयोग किया गया है । वोटर को 7 सेकंड के लिए एक पर्ची दिखाई देगी जिस पर वोटर का नाम और उसका चुनाव चिन्ह नजर आएगा। एस.डी.एम. बरनाला श्री वर्जित सिंह वालिया ने वहां पहुंचकर पोलिंग बूथ का निरीक्षण किया।

श्रीमती ज्योति द्वारा कोट इसे खां शिशु वाटिका इंचार्ज का दायित्व लेते हुए

40 डी ,चंडीगढ़ में 'कहो कहानी गतिविधि' का हुआ आयोजन

उत्तर क्षेत्र की 33 वीं एथलेटिक्स प्रतियोगिता - नाभा

पराली जलाने की हानियां विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता - भीखी

मालेरकोटला में दसवीं व बारहवीं कक्षा के लिए एक दिवसीय कार्यशाला संपन्न

राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस - अमृतसर

सर्वहितकारी केशव विद्या निकेतन (प्राइमरी विंग), जालन्धर में करवाई गई पेपर कटिंग गतिविधि

चित्र समाचार

सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब द्वारा 40 डी, चंडीगढ़ में आयोजित किए गए पूर्व छात्र सम्मेलन की झलकियां

श्री विजय नड्डा जी को सम्मानित करते हुए श्री संदीप गुप्ता जी

बाएं से दाएं श्री शिव कुमार जी, श्री यश सिंगला जी, श्री मुनीश मित्तल जी, डा. विवेक गुप्ता जी, डा.पूजा जी, श्री संदीप गुप्ता जी

परामर्श दाता	मार्गदर्शक	सम्पादक
अशोक शर्मा अनुज	राकेश शान्तिदूत	मनमोहन कृष्ण
प्रकाशक	सर्वहितकारी शिक्षा समिति (रजि.), पंजाब , विद्या धाम, गुरु गोबिन्द सिंह एवेन्यू अमृतसर बाई पास रोड, जालन्धर शहर	
प्रबन्धक	करुणेन्द्र E-mail: Sarvhitsandesh@gmail.com whatsApp No. 94634-69485	

Find us on : vidyabhartipunjab 94634-69485

www.sarvhitkari.org vidyabhartipunjab